

Symbol of Quality of Finting...



PRASAD PROCESS PRIVATE LIMITED

Character and the contract of

BOMBAY & BAMBALORE

जीवन यात्रा के पथ पर शांति की आवश्यकता है।



इनको लिलि शर् पिलाङ्ये

हाराज्य (क २ एस २ के २ वर्गन) प्रदर्शन वि० शन्यस्ता ३५.

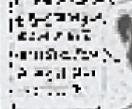
चन्दामामा

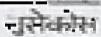
14 6 14 क्षा देकी प सारत का इतिहास नंदर की कथा इगेंशलिक्स (माप्रजाहर) स्टिक कः दिशा कृषा कर 73 7.3 सम्बद्धाः स्थान क्षरीए कर सूच्य 23 बुखनाभरी भाषा 31 वांच सूच 13 सम्बंध थान 39. योग्यनः को परीक्षर 23 बुक्षकान्यः , सामानाः) 84. **ः क्यां ए**ह 1.3 लंखार के आखर्ष ş; कोटो पारश्रपीकि व्यक्तिपोर्गातना 5.4

मुन्नू बदल गया



मुक्तकपुरेन्सरे हैं करते । अंग्रह है सम्मेरिकी मुक्तकपुर करती देशके । अंग्रह का समुद्री





प्लास्टिकले



ent la recita di pile se en marco di limbo seren di uni en male li ti il marcifi il te sensa di la cospario

न्ति एक र स्थ श्रामकेट क्लाम

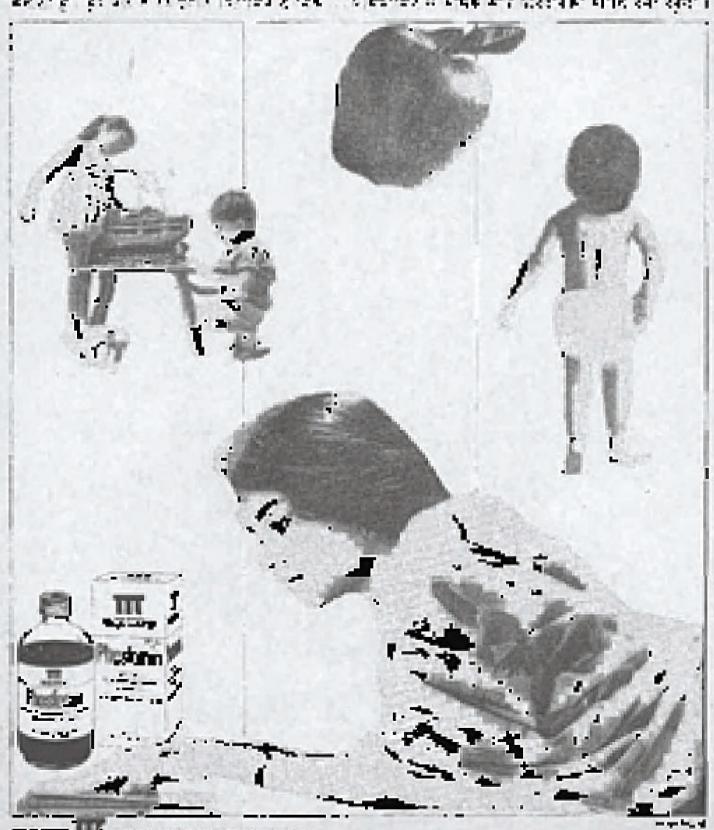
बच्चीं के डिए अनुष्ध मीत्र एकोस्ट टाइनी टोट बंदम बर्को को क्यामी पहुद को मान्य बा पान को गानको, तथी का बदन ब्युट्ट के अपने के जाए बनावा दूका पहाईची होट "एपराइ बेम्ड्स इंटरन की गानी बेडिएका को मान्यों के पुन्त है। बादमें बर्दा के बिए मान बना दूका एडाईची होट ए यह बाद हो नदी दिसारोंना हरको च्युट इन्हेन के बेब्दन वे जीवापूर्व "हाईची होट " प्रदेश



विकरमी फलाम्ब कम्पनी प्रीकृतिक समर्थे क कम्पना क विद्यों के प्रश्य

सारे परिवार के स्वास्थ के लिये फॉसफामिन

मिन्नवीचित्र देश्यामेन को कर नेत्र कर करित्रक किरावानीय कोई मैं तुम दूक स्ट्राहर द्वाराष्ट्र हैं हो। आपके पिनिया को बने पर खुर और पराध्यात तो रहा करित्रकीय है जो तभी सम्बन्ध की एक प्रश्नीदेश का अमिन्नवान पढ़ी हरेता। करित्रोधिक कर दशकी प्रधारण है। यून बहुतात है। करित्रा के इस कहार है। कार्न की नक्षाप्त करात है। हुए कर है पर हता है दिस्तावान होति का स्थानवानिक में कामके माने प्रदेशन का मानद दस्त स्मेत्रत ।



जिटीनया ।

ब्रेटिनिया



यमृताजन

दर्द को फॉरन दूर करता है

अग्रताजन १० दशक्षणी वी एक इसा जाई गीर जुकार में अनुका

समुत्रदे**क्त दिसिटेड**, स्थात । यहर । कन्कर । १९९३



ALZE II H

ऑक्सि में हा दिन चुक्त रहना जरूरी है. टिनोपाल सफ़ेद कपड़ा को अधिक सफ़ेद बनाता है सफ़ेद कपड़ों के उपकीता जनना है।

With work that age to the B. an our P. year B. an our P. year B. an our P. year good from the age of the property of the property of the age of

south the extraction HART - FIRE MARKET serve of this week to save miner the coulont was and and show fallow ger et l'Her randspekt of thought work are attent for alternative are used to cally speed many and linger sets न्यों । अवसे के सा तेना worden man mede to the littlest swiger affer 1945 her straight THE THE RISK STORY to any by tracks. न्याताला है ... तथा दका di application for the page. वार विश्वविकार





सीरवने में देश क्या सबेर क्या।

per enter eine einer fa que



मन्त्र भारत रहा है हो अब हुता राज्य है जाएंड



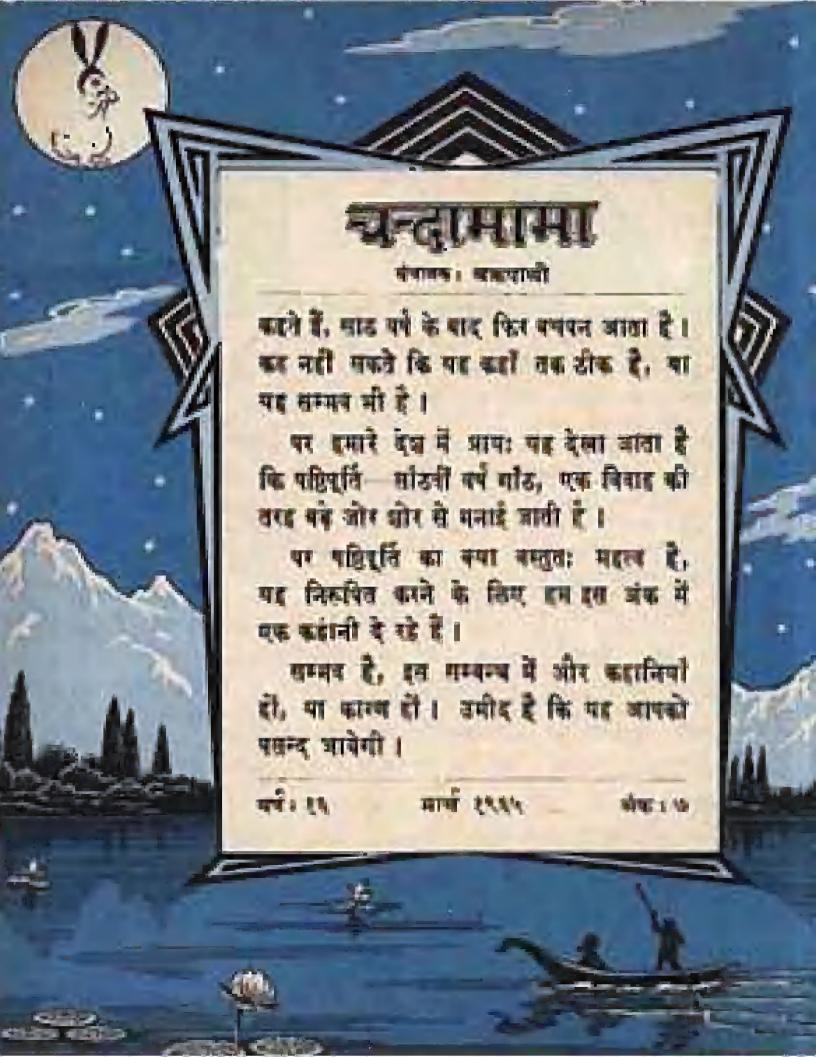
白京年年十二次日本年日大大大

KKIDDDD DE

AH ride;

larch .

でチアケテカケー





कारना होता, योजा भी अपेका शेरवात बन्द्या शासक था। उसने पाँच वर्ष हो राज्य किया । परन्तु उस कोहे समय में ही जसने एक भावता सासन की व्यवस्था की। "इस पटान ने जो शासन कुमल्या दिसाई किसी ने मी-विदेश सरकार ने भी नहीं दिसाई।" मा एक याब्यालय ऐतिहासिक की राय है। सुनि कर भी पसूली, किसानी के इक, पहा मबन्ध किये । देश की रक्षा के लिए इसने सम्बो सम्बो समुके बनवाहै। पूर्व बंगाल के सोनार गाँव से सिन्धु नवी तक १५०० भीर मुख्यमानों के किए धराँय बनवार । द्रीता ही न ।

" निर्वन स्थल में सोने का बैला तसकत... शोनेवाति की रक्षा के ब्लिए भी क्रमने अलग रक्षण सेना की ज्यवस्था की। उसके कासन में सन्वयो एक ही तरद का स्वाम मिठता था। राव जुन्सन्य के छोत नी कानून से वरी नहीं में ।

बोरबात कोई पने बुद्धम्य में पैदा नहीं हुआ था। पर स्ववतिभा के कारण यह मारत के सुरूप महाटी में एक आदि, को मामाणिक बनाने के लिए इसने समझा जाता है। अकार से पहिले इस जैसा मना रक्तक कोई न था। अफबर को शासन में जो सरकता मिली उनकी नीय मेशशाह ने ही बाबी कीस रूप्यी उसकी बनवाई हुई सदक अब भी । दोरकाह जन्दी मर न पाता, दो बी है। उसने माकों के किनारे दिन्दु छायद भारत के रशिहास में सुगत दुग

होरखाइ के साथ वह जपनान कामान्त,
जिसका उसने पुनुद्धार किया या शिक्षित
हो गवा। वारम्परिक कम्बद और जरावरकता
क्वत हो उठी। शेरमात के बाद उचका
करका स्थीन जा पुन्तान क्या। व्य मी
विद्या की सरद समर्थ था। व्य मी नन्दी
ही १५५४ नयम्बर में वर गया। उसके
नावाकिय क्वत्वे की उसके यान व्यविक्या
ने नरवा दिया और यह स्वयं सुन्तान
हो सथा। व्य मादिनखाइ सनर्थ नदी
वा। उसके समय में अख्यान सामान्य
विक्रित्त होने हमा।

वही गुनार्ष् के किय अपन मीकर या। वह पन्त्रह वर्ष बिना फरी असकी नदद मुक्ता रहा। उसके माहवी ने उसकी नदद न की। सबसे बड़ा बाह होती कान्सब या। उसने अस्ते आई वी सैनिक सहायता था। उसने अस्ते अर्थ की मैं भी उसने उसको कोई महद मंदी।

हुमार्चे के पास बहुत से मारणार्थी तमा हो गये थे। परन्तु उनके खाने-पीने की भी कोई न्यक्त्या न थी। सिन्तु पान्त में छावनी बनाकर, फिर हुनाये से जपने सामाञ्च को काने की जेशा की, पर वह अपने प्रका



में सन्दर्भ न हुआ। जिन्धु गवर्नर् या बुक्तेन की सनुता ने इसने इसन दिया।

ृष्य दे के जिल्ला महीती में, जब बुमार्ये फिन्सु के रेगिरतान में पूग रहा था, सन उसने बमीदा बेचन से साथी की। बा दोल जिल्ला जन्म जैनी की सदयों थी। राज्युत राजा उसको जाअप देने में बिचके। बह नमस्पेट गणा। वहाँ के राजा का नाम राजा मसाद था। उसने पहिले हुमार्थे को बचन दिया कि बह बहु और हाकर राज्य बीतने के लिए मदद देगा, पर मन्त में उसने बुक नहीं किया कराया। १५४२ नवस्वर २३ की. जमर केट में अवस्था का जन्म हुआ।

बद सीचवार थि। उसे भारता देश में करी मदद न मिलेजी हुमार्च परस्त कवा. वह। असे बाद वहसाम्य की महामता पंजी । उसकी धर्त भी कि प्रमाप् क्षिया बने और बिहमें पर बज्यार का मान्य उसे दे दे। फिर साने १४,००० की मेना उसे दी। अपने पिता की सरह, धुनाव् की भी फारमी मेना भी बदद में बारत जीवना पदा ।

वको में जा गया। परन्तु उसने बन्धार उमे जन्या करके नका नेश विवा गया। किया नवा।

भक्तती को भी भक्ता नेज दिया । दिन्दाक करी समाई में भारा गया ।

नवस्थर, १५५४ में हमार्थ, फिर विन्युस्तान की जीतने निवल पदा । १५५५ फरवरी में बादीर, जुलाई में दिली और जागरा, हमार्थ के यश ने आये। अम माबाह्य का फुछ भाग, जिसे यह भगनी कापस्यादी से स्ता बैठा था. फिर उमने जीत किया।

कर्षा के कारण, असकी मनावृत्ति किम तुगद्र बंदक गई थी, बद्द आनने का समय १५४५ में बत्यार, वर्षुक गुमार्च के दी न मिला। २४, जनवरी १५५६ में यह दिली में, जरने पुस्तकारण की सीड़ी पराग्य को नहीं भौषा । बरूबार की केवर, से उत्तरता जवानक किसन गया और सर कारमी और मुनलों में बुद्ध तू नू में में गया। १५ करवरी को, जयनर को १३ मी हुई। बरसान की केंद्र कर किया गया। वर्ष की कावस्था में की मुक्तान बोकित

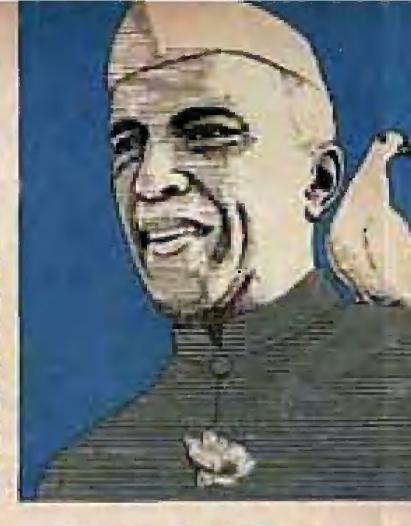


नेहरू की कथा

[]

खिटेन दारा पीषित सुपारी के प्रति गरेन्सेस और मुस्तित तीन दोनों ही असनाष्ट्र रहें ! इन सुपारों के बारे में चर्चा फरने के किए बच्चा है ! १ १ ८ मगस्त में थी विशेष सभा बुलाई गई. उसमें इदान्यसमान पर्देश नहीं अस्थित हुए । इन सुपारी गय, जिन्होंने समर्थन फिया, उन्होंने जाकर जपनी अलग संस्था बना ही !

वह गुपार तो सेर थे थी. इस बीच एक और पात भी हुई। देश में राहीय बान्दोरून और वण्याता माना था, राजकीय मिश्रुको की वैसे स्वार्ग हो. इस सम्बन्ध में मतार देने के लिए मरफार में एक समिति बनाई, जिसके अध्यक्त अध्यक्त रोजेट नियुक्त हुए। रोजेट की रिवार्ट उनी दिनों पकासित हुई थी। उनका परानर्थ बढ़ा कड़िन था। उनके आधार पर दो कानून भी बनाये गये। ये कानून १९१९ फाकरों में महायुद्ध की समापि के तीन माम बाद बोबित किने गये।



रोनेट पानून ने जान को इना-मी

री। देश में बनकती भन गई। इनके
पारून गहनी जी राजनीतिक क्षेत्र में जाने
जाने। मोटीकान जी ने भी उनके परून
अपनी ज्यार नीति कुछ अंभ तक छोड़ी।
जब साकार ने सुधार उद्योगित फिन्मे, राष
उन्होंने उनके बारे में बचनी पुछ पुछ
सामित भी मुचित की। प्रवाहर जी ने
उनका निरोध किया, परूनु रोतेट परन्तु
के बारे में जाने को मतमेद न था।

" अब स्था किया जाय !" की:-बेस के सदस्यों ने पूछा ।



"क्या किन्छ जाना जन ने भनात में रुपने जाने, तन हम सत्त्वाच्छ शुक्र पर देने।" सान्धी जी ने गया।

पर पारणी भी से इस खन्यन्य में पोई उत्तानकारन नहीं दिखाया। उन्होंने उन फानुनों को बाधिस तेने के लिए बापसराय की किसा। बायसगढ़ ने गान्थी भी बढ़े बात नहीं सुनी। गान्धी जी स्वस्थ न थे, फिर भी में सल्दबह सभा के लिए सदस्य बनाने को। सर्वाभद्द सभा के सब्स्यों को रोकेट फानुनों को सोइफर, नेस जाना था।

्स कर्मकर से क्यारस्थात नेतृहर विश्वने क्रमादित हुए। उन्हें केंग्र में स्मय निरुत्सादित हुए। उन्हें केंग्र में स्मय मैकाना, सेंग्रान न था। उस उन्हें मान्द्रन हुन्य कि जमादर केंग्र वाने के किए उच्चन में उन्होंने तुरत गान्धी भी की जन्महानाद नाने के किए निमन्त्रय मेंग्र।

गान्यी जी भागे। उनसे अवाहरतात के गान्यत्म में बातचीत करने के पाद मान्धी जी ने जवाहरतात से बहा—"तुम जन्दी में पूछ ने करी। जबने चिता को क्षेत्र मत पहुँचाओं।"

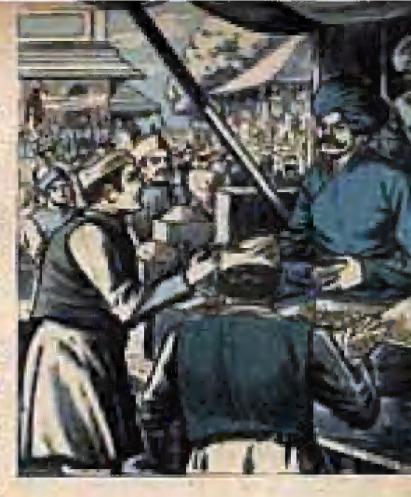
रितेट वित्र को बायहराय ने कानून भगाने की ठानी। गान्थी जी ने घोषणा की, कि सर्वत्र उसके विरुद्ध एक दिन इत्रताल की जाये। पहिने देन मार्थ भागावाद के लिए निकात किया गवा। वर उसके बाद का तिथि द नवैल कर दी गर्द: उस इक्ताल को सफत बनने के लिए बमाइरलाल ने अपनी सारी सिक लगा दी। कोन्मेस ने मी कल्पना म की भी कि का सत्यामड का दिन इतना सकल होगा। न सरकार ने ही सोचा था।

................

शास्त्री जी में पहिली भार स्थल सप से विश्वामा कि व कित्तमी अच्छी मध्य जनता के मन को गणजते ये विदेशी हुकूमत भी हैरान रह गर्व। सारे देश ने जो भानदोलन कोटी कोदी तरेतों के का बे श्रुक गुजा था वह यही पत्री तरंनी में परिपतित गोकर परसंकर भी गमा।

म माधास क्यों सत्यात्रा के स्वमित होने की सूचना विली नहीं पहुँची। विली के नागरिकों ने ३० मार्च को ही सल्यावह किया । बान्दनी बीक वे हिन्दू मुसक्यानी ने एक द्वीवज निदेशी सरकार के विरुद्ध ज्यमा जगमतीय प्रकट किया । द्रपटमें यन्द कर दी गर्र । उस जामा मनिजद में, कहाँ अपतसर में विद्यापतः लोगों ने दिसा पर कती जोतनाकेव नवाज पदा गणना बा युक्त आजीव पात हुई । स्वानी अग्रानन्य नानक एक हिन्दू सम्बंधीने मुस्टिमी के मुक्क बार्ड बाधण किया। इसमे जिटिया और निगढ़ उठे। सैनिको की नाइद से कहा जहां भीव देखी, उसे लितर जितर कर वी, कवी कही गोली थी परापी।

कई महत्ती में पेलीस और फीज ने गरवड़ी मच गई।



मोकियाँ कोबी । यंजाब में उन्होंर जीर जवान दिना से दिया । कई घर जला दिने गर्ने । देने कसाद हुए । अंग्रेजों पर रमने नी हए।

बच्चे में विक्री बहते समय बहर अपेड को मान्धी श्री विरुक्तार कर लिए गर्ने । परन्त उनको धर्म्या ने ग्रामा गमा और बहाँ वे १० व्यमित की छोड बिने गरे। पाना गिरफ्तारी की लग इ एपित को जब सत्यामद हुआ, तो के कररण बच्ची और आसदाबाद में

१५ जर्मक की पैजाब में मार्शक ला पोषित किया गया। अन्देक दायर ने अधियाताने यांच का राज्यातालय किया । जुन तक यह तक मार्चेट सा बटाया वया, तब नफ पंजाब के लोगों पर बरे जन्मकार वित्वे सचे । १८५० के बाद बिटिश शासकी के किरुद्ध कर्मी इतना ति मारतीको में नहीं उमदा था।

और विविध गात यह थी, जिस रेटवेट विश्व के ब्हारण पर सब दी ग्या था. उमका किकी भी मन्दरभ से कही भी वस्पेग नवी देश ।

पंजाब इत्यकान्य के बारे में ब्रिटिश मरकार को जांच करवानी दी वडी । छाई हरूदर के जेलता में जार भारतीय, जार थे। इसके राष्ट्र कर किसी को प्रकारित विपोर्ट उन्होंने पेश वर्ष । दोनों में ही मनाय भी वन पर या ।

जनेरज बायर की दक्ति किया गया। बनेरज राषर को मेना में निवासका निवास मेळा गया । बहाँ वह से उसके "पराक्रम" के किए उसकी सीने की सकवार भी दी। मारतीयों की विश्ववर्धत हैरी न हुई।

रन परकानी के कारण महेगीलास की मी गान्धी और अवादरस्टा से आ मिले । तन से एक कदम नी कभी पीछे न स्ला. नमेशा स्वतन्त्रता संधाम के बोदाओं के जम भाग में भी रहे। मीतीखाल की मना के भाज्योजन के अनि कोई विशेष भावर्षण न था। एमने नेदेर सम्देर स्वी कि प्रजा मतिलिधि अपने इचलीने दव के गांच ग्रहने के किए दी, में स्वतन्त्रता मोद्धा वन समे विशिष्टा ने मिळकर- बाब की और दी करनेवाका मुख्य कानेवाले गार्थी जी का



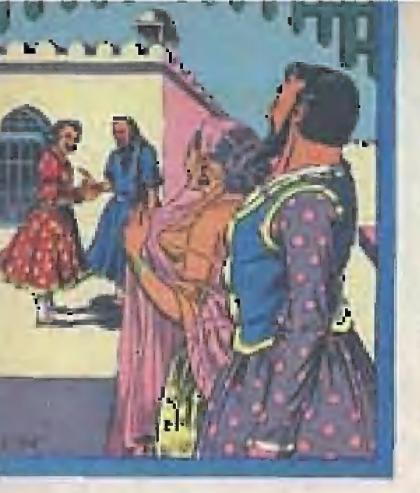


[%]

्रे सामानारण के विकरित्तन करण है। में कि का हा विकर्ण, जा सुरक्षात कर गामार करणी करने हुए। नगर्भ कार्यन हो गर्भा । परार्थ के राज्याराज एरकानस्य न के उपनी नवान करणनाथ क बहुत 🖟 पहुँच किया । यहाँ बलको विकास सम्बद्धी करणा में समाप्त को समाप्त की दशका मान क्षेत्र अनुभावत भी गणका अस्य एक की अस्य किया हो। है है कि अस्त रकों प्राप्त सकता करावाल ने को नेपारीनेया की प्राप्ता है और दीन हो। भी राजा का दे हा

विनक्षा का रणाया । दूसन वर युद्ध हो उठा उलका हुँका महननः हो प्रकृत ।

ल्लाह ने हैशाना प्रकृति ही जिल्लाकी जीत हुने पाहुबा कर के र दिया जी वर बहिरद्रांक को कथानी में से एके जिसे सामाना, लोगे हे कुके इसके हर देशे त्रशिल्यम् एक शुल्यम् ने वर्णने कर जीत्र विरक्षिणीय के वर क्रान्त । पार स्था में हुआ करता। स्थान्द्र चर हरी समझाना है जा नहीं, खराजदनह 🗎 दर नहां शहा । हता। उस असामान ने समान नाम है एक "औ एक्स..." (नागरेका में नारा । कार समा जीराइटिश का जान करा नीकि भी पर निर्धा साथ था, कर क्षित्रभा, भित्र भी ज्याने कानाज क्षेत्रका, उट एक्टरन लाक दी पर किया हेर्दा कर



डम्भाक प्राप्त बढ़ जिल्ली लेखक, अस्त पुर ें हे भारती सर्व पुरुष है की ना विन्या राज्यात एस्टा विक्रिये कानी भी । यहा इसके जुल क्षमा अपने बंध एक इस क्षेत्रा भित्र है। कहा लगा था, प्रकृति ावे दर्भागा

पारक्ष आप के है कहागा में इसकी यह मुझे हम प्रीका की कोई उनकर नहीं है . राज्य । हो है जानां स्थान प्रयस्तानाः ही होगा। " विकास से दर्भ ।

अपने । परित्र कह बान विश्वती तरहर क्ष्मद्रसाय के पास गई. मेर पुरे भीत के स्टार्टी (सक सहस्रो है " उम्मान नाम 31 A.

'' केन (१५६म ' महा' हार केरनेने हेर ह का सुरदार असि पर प्रत्यास कर en seit de leune & en feiler ₹ 431 °

'' प्रश्लेष्टर ने, दिश्म में पान कर्दा तामग्री । संग, विभिन्ने, 🗦 अफारे न राम्यान के पाक प्रतिभागे जन हैं " अवात शास ने कहा।

र्थाओं कार्यक्षात्र में पर्वत गाँउ उत्पाद कार के बीड बीड ब्रह्मी जिल्हा, बीडे हुई। ह के पास पार्वी जब बीटिन्ह हिंद, अर्दिशाम स्दामी ने बात कर नदा का, जो नदा मिल के विव में अध्या हुआ कर । "एक देव. त्व नके भागा शिक्षित भव करने के भा अध्यक्ती है जरून अप दे रहा है। सिंध बाको रह दी बना गया है। अब NAT OF STREET OF

महिल्ला स्थानि ने पहला जेके हुए · नाम ज माम करी है, जह जिल्लाकी देशन्य की लेक ईशारा विकास विकेश्हरिक वरनस्यापः बाध है, आक्ष्य अप पह के उपनी और देखने हो, विसन्त ने

नकता त्रहा तराकार, हा देव दिला है। वींबरहारिका थे, वेबेर पर पद गाउँ

वीरहडसिंग में " विश्वा " करा

विकास काकी की अपन देखा पर क कारकार (कारों) अही - " मोर्स, कर) गरिका जा है इंग्रिका की रूप बनाने देवी 🥃 । केलावी 🚉, गुरी कोट संघटा है र बहाराध्या के बागा वास भाग न्य बचा हो बहा है। त्यारा नार विशेष 新年 40年 III 46 年

बावेन्स्रीयः श्री अध्या दे बाव उत्तरह राक रहे । जिल्हा क्षिकी को इस समय केंद्रे अपन करने को र अब देखेंचे, के भोगीर कि में भोग से सामा से गा। है " सर्वे बारा । दिस्सा कर न ने ने

" शिवाद, 🗢 मा महा 😸 । जुन मी un', " Affenfag france

विस्तार है एकी काना है करा " अ देखाँ, प्रदेशे इस क्षेत्राच में जन्**ता** 2 4 "

पंक्षित्रक्षित का देंद्र भिन्हना तथा " क्या, जुन्न यह कार महीती र[ा]

धनका ने चन्त्र दाया उपद दिसाने हुए



भाष्ट्रपण स्थित अवतः अति ने। अत्ये अपन कर, उसकी भार की कान नहां स्वी प्राप्ति अपनेत सुदिया हिलान्त्रका के हा है ।

" species licens of the first and from नुष्टाकी इच्छा गुरी की ..." वीकेट्रांगर में करों । इसमें में जहार है हमें न है THE REST.

'''भद नुभ कार्य: ," दीवेज्द्रका है अभिन्य भ वन्य ।

े नहीं अपने के कि कि अपने के किए की अपनी प्रामी केबियो, अध्यक्त रक्त हो। करा — गयरी राष्ट्र हैं दम पर के दिन कार्यवर्धीय रोगा ...'' दिनकारी गुरा ह



ताह राज्या सम्बद्ध एउटमा उपने ब्रेस्ट किन इपारी अभी सामक गुरु गडे १ उप इसके अभी संग्यों, संग्रेडियइगिए या विस् रामित पर हुद्धक रहा था।

भिन्नका यासर की मूर्ति का नाय, विना भिन्ने पूर्व नार्दि, स्वारता आने की के विनायी और देशनी जानी भी। उनके अस्ता के पास की नार्वा

भारत पहालिस दिस्ति हैं। दिस्तिया असे हेर्ने । इ और दिस्ता कलकरमण के इस सहस्र है दिसका, स्वित्स कर रहे हैं। अहाँ इसकी रहेंद्रें रहती हो । दिस्स प्राधी औ

विस्ताह प्रधान साम की यह देवानी बही। उपाद वान, दशके के तो केंगा या पुढ़ उसका पेशा था। पर्ने सा। यह है दह पुष्ट की दश्में व दिनकता था। परानु यह है निजय दिन काने के बाब, विजिने! क यामान करना उसे विकाद प्रसाद न भा

विश्वस्य और जिल्हासम्बद्धान की अनुसार स्थान अग्रद्धार परनी, सी सम्बद्धान अग्रद्धा देश देश की देशनी स्थानक है। गर्या देशि । इसकी द्या के कारण देश दिवस्त, प्रक्रिय काली में नीहरद्धांगर में प्रिक्त प्राणी मी

* * * * * * * * * * * * * * *

(म्यान राज्य, अन्यस्थान के बहे अहे कः स्टरण वा . वृक्षांस्य राजनस्य है इसकी अभी जाने की छुट (मही) हुई और तन्त्र रायप कि विश्वान गृह में हाने का किसी की अधिकार स का , उस्कान की क्षी है था।

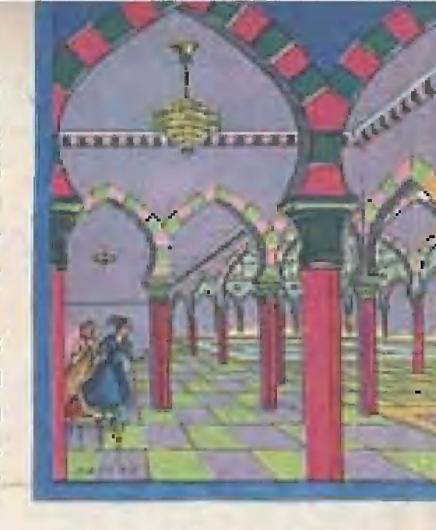
देवता वे देश हो है. एक एमी के ड°क ,≪ न स्थल के क्षण गृह 'बड़ा मेही उन्हें पहलेट, उपनान ने दालों मे करा । भेग बदा अना, रम देश्यों के फिल मनस्य प्र. हैं । इनक्रिए अन्द्रे हैं। यर सहाराओं ''

ा सकता है :"

ं इसके स्थित अध्यक्षका स्थानधाः ने हो। हे दर्जा । बाह्य देशे। " दावश के बागामा ह

हम ज़िल आहर को अन्याधा की एक गाप से गर

मे पूढ़ा।

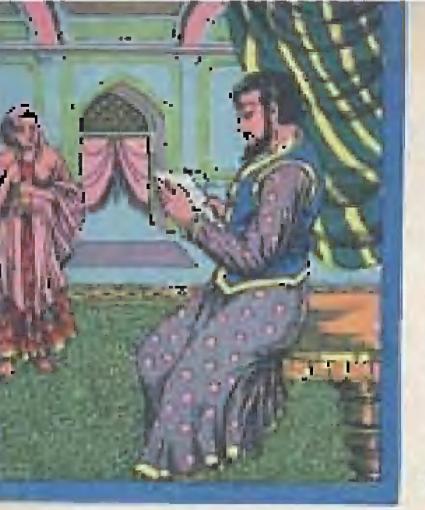


चानी न प्रवादत या विकास ने अनाम एउट की प्रवास नहीं है। न्द्रणीत, भी तमानी पुरद्रा — " 🗎 कहा किया अन्य समाप्त्री 🕪 प्रमान स्थानकार और्याचन हि कि नदी । अदी अपने हैं। " दिस्सा

म जीवित है

" बहुन्द्रल " मा कर्षण हु"

द्राना में नामक असमायुर के बहुत दि एका 😬 निकास की वीदी व पर इस समय केंद्र में इत्तर करता किया बन दिवासा की अपने में सही है। अनुसी विकेशन की सामग्री में बिहर्ने भारति । विभागति अस्तर स्थान "पार में सुन्दारी और कोई अदन को बहादे की पूर्ण असी प्रदान है अन का अनुका है : " इस्थान में चिन्ता तका है नहां उसका है साम क्रिक्ट, कर Sim 10 45 \$ 1"



पद्मापर राग जनगणते के क्या है। इन्हें कर शहन हुई है। इन्हें नाव्य की नहीं के अवन्ता है। इन्हें पूर्व वाही की निकार है। बदा आहे इस किही की को नाम पदन की के इसहि किहाबा है हुक है कुछ हुई। ब्याकी

विभाग ने दिसे तथा पर ने उसका में बादिन होते तथा हता पर ने वादिए।
कान है, जो पुरे का नाम का बादिए।
का कुलार परानी है। रूप में का ना बादके
किहिता है। ने ने हैं की साम तथा है। एक बादके

किन दि. कि काली जन्छ नहीं है, दश कैदिकों के अन्य बनेना की ते ''

पर्वति देवी नीत वात है उन्हें देग्ली व्यवसा हुम्मान है। इन यह उन की है मेल कार्य नहीं है, किये के कियी वात्रका सही क्या, जार व्यवसायक है ही बीत की की कारणात्म क्या विवाह

ादी पहा इस्ता के ने महाराजी, ह्यान के पित्याद कभी कभी हुछ करना उत्तर है, प्रसन् इस अपनेत के मिलिक्ट्राट शहर क्षा क्षर कहार में क्ष्मकान्य के बाद

ा हो। सम्प्रभाग पुत्र भागान हो। विश्वपात्र टीमीडिया । विश्वपात्र हो। सम्म

उन्सामभाव से उसे पा बदा

प्रकार । क्यां मैंने अपनी प्रान् दिया था कि ने स्त्री दिये में नगड़िया भाज पर नगरी का सम्बद्ध या त्या है । क्यां कियो कर नगरी था दिश्वा था, शास्तु अन राज्ही अपना नहीं कर त्युं है । हुछ दिना अह सामह अपने प्राप्त कर नी समाचार करने कि

े इप्रेंकिं, पत्नी भारती विशे भिष्य भी है ने पार्थनी हैं, उप्युक्त ने कड़े हैंसे कान किसे हैं, उपयुक्त नहीं सहसे वाहिस के पदी कारण है कि समार ने मिरी पीट कार्य प्रेंतिश न कीरते हैं

ार बहुतार, कार्य मेरे मीना था, कि ी की रहा हाओर मध्येषण की मुंबा है। सर्को । पर का सर्कान का दुन्का हम पहुंची की अका कार में हैं, ता स्पति भाव दे हैं है अभिष्ठे । इस देखी की एक पार्वका है। जेन्स अब सुझ कुमा, बेच से देखका कृत्यु वीध वेदना करे, से उन्ह करता, किया नीच अधि की थी. अभाग ने। ज़ेरफाइ राजे के फारफ उसके कुछ अवस्था विशेषि । प्रस्तृपत प्रन्टा नहीं है। नेतम इंदर के ; अपन के परहींक It that I will have a way in agung (gaine de grad) a defer de figure (ब.प) अ: : ी।यन्त्र ने ए / सूक्त वेट इनकी क्षेत्र प्राप्ता व दिला । सम्बुधि होतेरद्वतिक के यहा हुआ कुला के राम में वह मही है। हाराहा जुनावन की जना संशोध में महिल्ली 🗥

'प्रश्नाहर के किसे के नगीर हैं। एक प्राप्त ने तरपर्शास्त्र की द्वासनी ने



प्या सुन्द्रभा था। या अवने पान के हि हुन भी प्रभावा जीन से निया था। दे में निया सामनी पुरान की नाम्य निया कर देती । यह दूस पुरान कि अपने से पान कर दून्द्र दिसा में सामित्री पूर्व | यह अपनाम आरामित्रम् भी सामित्री पूर्व | यह अपनाम आरामित्रम् भी प्रभावित्र पार्टी कार्या प्रभाव ने प्रभाव करते। सामा : प्रदर्भ की सम्माप्त स्था प्रभाव करते। सामा : प्रदर्भ की सम्माप्त स्था के प्रभाव करते। सामा के दूस (ह्या की बी क्षा मान की देनी, क्षा

कर दिया गाँउ शिक्षितीसम् देशे हा सी की रहत कही। बारा राष्ट्रा होती हा से बाहे एसके बाह्य बाह्य करत किया और उसे कुछ हैनका मुझे पाला। में अब दान गाल अभी दिया। यह अब मेंने में यार नहीं है, नदी भी, ते गुक्त प्रदान अपनी पर्भी भीचा इस दिनी न' के बनावा भा ।'' વર્ષા કે તથા મહાતા કેટલા જિલ્લા જો र शाक्षा । बार्टी के १८२६ की से देश रहने हैं। गुरु भी मुख्य, भिरम्भ से मुख्य - गानव नहीं जनक न की उनके जाकर उभावी महिल्लाकी कमा कहा और धारी अध्यक्ष के अध्यक्ष के अपने के भी का भाग गर्दे हम दिया प्रस्ता वर्ग नश विष् नाने में उस दिन सह ये एक बेस रक्षणे पर है नेच क्याकर चट्टा : उस पत्र में कर्त में कार किया। उस मान के एवं केलाकर, भीर के जिल्लामां। किने काउन हुआ।" प्रभ की क्या जे उन उन्हर हैंग्या, ल बहुत में अहरता न वा जीन सर्वत का तम कर रहा की है उसी का बहुत कान इक्ट के बोदि उप करते था। परान ही ,'' सम्बद्धान ने कहा ! ने उनकी काम प्रवादक कोचा । असी है। विकास रहा गरा का गरी । असी है।

टीट में में बरका है (हर) मेर का

वह सब दर्वक उन्हलभान ने धी है।

भारते, भार जेल्ला का सुरुवारको पत नाम था । गेर लेना ने उने एक दिया । बेक्स बर्फ विमाय करता " विकास है कहा ।

" प्रश्निक प्रदान सम्म स्वर मा सरकार "" ्रिक्ट ने प्रांत सहायस्य गाउन — " अक्टो

ांद्रश पत्र में काल प्रमुख रह है।





सिन्द का दिया हुआ फल

विकारणे ने इंड न छोड़ा। या के दाल गना। पैट पर में यान को उतारणने गरने पर दाल यह दमेंगा की न्यट नुपनाय स्वाराम की ओर चलने न्या। नद प्राय ने स्थित बेलाल से कहां— " हो साम दुन यह रहे हो यह ठींजा है या सामत, यह तो मैं नहीं जानता है। परन्तु मानी प्रसी सम्बंध प्रान्ति के लिए भी पूर्व का सन्देह रायने में भा पत्ना है इसके द्वादरण के सब में तुम्दे मिळवस्य की करानी सुमाला है। सुम्दे मन्द्रन से मानस द्वीचीं, मुनी।"

पतिते वर्मा भार्मप धर्मा नाम पर धर्मा बाइन रवा कर्षा वा । उसकी पत्नी पत्न बाम नागकेनी वा । उनके पत्नुत दिन तक मन्त्राम न पूर्व । उनको या फिड बी फि कोई तर्मन करके उनको नरक है। नहीं

वेताल कथाएँ





बचानेना । नागनेणी भी ज्याने बॉस्पन पर बिजितत थी ।

जन एक सिद्धपुरुष उनके नगर ने से या रहा था. तो मर्चित प्रामी की विसाई दिया। तम नार्गन प्रामी से अपनी रासन के बारे में उससे बजा और पृष्ठः कि उसके मान्य में मन्त्राम थी कि मती। सिद्ध ने उसका दाण देखका बद्धा— "क्यों मार्ड सन्त्राम के लिए एडपटाने हो: तुन्हारे हम जन्म में सम्त्राम गढ़ी है. दान-यमें काने तुष् जीवन जिनाओं।" " स्वामी, अगर जाप वैसे किद्ध पुरुष संकल्प कर हैं, ती महम्प भी बदल सकता है। आप क्रमा करके दमें एक लड़का दिशवाहके...." भार्चव संग्री ने क्या।

सिद्ध मान गया। उसने एक आम रिया। उस पर मध्य पड़ा और भागेंग हामी के दे दिया।" इसके मानेवाले को मर्ने गुलसम्बन पुत्र की मानि डोगी। अपनी पन्नी को नदा बीपन साने के सिद् पद्धी।" का नदकर यह कवा गका।

नागंव प्राभी बढ़ा शुम हुआ। उस पत की संग्वत उसने अपनी पत्नी की की दिया। - इसे साने में एक मुपुष मिलेगा। यह एक सिद्ध ने दिशा है इसे स्नाम करके साओ।"

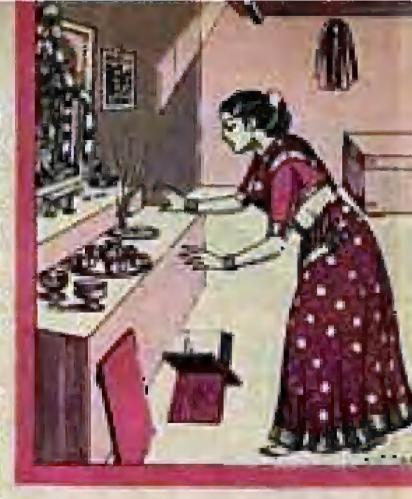
नार्गव धर्मो जब वह बात नपनी हती से बहर रहा था, की पड़ीम की धी पादिसकती ने उसके घर जाने सूना। उसने पांच के दिये हुए जाम की पूजा के कर्मरे में भी रजते देखा। किर गाविसक्मी अबना फाम सिम्हाकर चली गाँ। दर बाने बाते का पूजा के बमरे में से आम भी उठावन नहीं गई।

आदिसक्ती के जाम उठाने का का परमण था कि समस्तार उसके सात कदकियाँ

हुई थी। अनुके की उसकी एक्का दूरी न दूर थी। अनुने मार्गण करें, जन्मी पूर्ण में करते खुना था कि उस भाग के लाने से पुत्र केंद्रा दोगा। स्वर्थ दून वाने की अभिकाषा से उसने उस फूक को खुरा किया था। उसने पर काले ही स्नान किया थीर बिना किसी को दीर्थ पर बा मी निका।

नागरेगी ने जन जगरे दिन स्मान करके एक माना वादा, मी पूजा के कभी में एक न पा। गहुत सोजा । पर नशी कोई एक न मिस्ता। उसे वर समने सगा कि पति क्या सोजेंगे, जब समने गायम होगा कि करू सो गया था । नशी बीवपुत के बाद एक वे कार्य में । गर्मी उसके शुन दोने के बाद में मार्डम दोने ही, उनके हुत्य थी भारतन न स्वा स्वा वाये। । पाकिस सामवेशी ने जपने पति से क्या दिया कि उसने पत्त स्वा स्थि से

नागवेची के कप्त इसमें दूर म तुम, पर लभी छुठ हुए थे। सिद्ध के दिने हुए फल के साने के पाद उसके वर्षकरी होना था जीर जो पर्यक्ती पनेगी, उसके भी भी बचना था। इस समय बाद नागवेगी ने



लेगों में नजा कि वह गर्भवती थी।
उसके भाई बरचु वहें सन्तुष्ट हुए। बहुत
दूर से उसकी छोटी बहिन गांगीश्मी उसकी
देसने आगी। नागवेशी की गांचत हुना
कि गांगीग्मी को मी तीन मान का गर्ने
था। उसने जरूनी बहिन को बनाया कि
वह विस्त सनस्या में थी। "यदि सो हिन
संबद से बाहर करना है, तो जो पक्ष
हुन्दें वैदा हो, वह सुने दे देना और वह
किसी की म माम हों।" उसने बदा।
"वदि गेरे पति मान गर्मे, तो मुझे

कोर्न भाषांच नहीं है।" भागीतथी ने बजा।



मार्थनिकी जब जयने क्षण ताने हुनी, नी नार्यनेकी की उसके माथ अने की लिख बुड़ें। इसने काने में ते से का "जनव बक्त तो मुझ माउम नता है। मेरी जिस ने नी नकी बच्चे की जन्म (द्वार है। प्रमा दोने ही दके के गांच ना जानेकी " प्रमा दिन जार्थन समी मान गांचा

भागीतथी जार वर्षा की मा थी। उसके सद्भियों के जीर उनके भी। उसकर पति दुर्ध्वस्ती था। उसके सर्व जिल्हा थे। उपने दबी से कहा— ' यदि तुम्हारी बहिन की बचा तेना है, भी उसे अपने महने देने दे विकास स्थान क्षित् भी मान वर्षे ।
भागितभी का स्थान नगण प्रस्त गुना ।
नेसा नाग्येष्या ने पाटा था, वैसे उसके
स्थान दे सुना । स्थान स्थान, पहुत सुन सुगामस विकास स्था । स्थानेक्षी उस स्थाने की भीत प्रदर्श करिन को साथ विकास अवने गाँच कि उपकी करिन को साथ विकास अवने सामान्या के प्रदेश से उसके साथ गाने

भागे द्रारों यह जान जान लुझ हुआ कि एनमें विके गर लिख की द्रार के एक कड़के की एक कि द्रार के द्र के द्रार के द्

ाम नाने रे. नारण, पर्वाच गरी नाविकतमी के भी एक नवनव पैदा हुना । उभक्क नाम बाधन रखा गया

नगद और माधन का का-न-वेश्वक की एक साम हुना। पर उन दोनों का न्यवतार

होते और भी बदनी गई। पाषव बुद्धिमान, रहने कता -विवेकी, विनीत और स्वानारी था । यन्त्र कुछ दिनों बाद वस्त्र बीमार पड़ा । मुर्ख था। दुए या और वे रक्षण बहुने उसको उस की ने मगा दिया। कई दिन दी जाते वे अर्थाय तार्य के सिक्ष के बह मुखा प्यापा, अंगली और पारियों में बनावे गए गुण पर्राप के साधव में लंग पुमला-पितना रहा। पित यह अवस्त्र में मर दिलाई विषे, पर भगने डबके बहुद में गया . क्योंकि नरते सन्य उसकी एथ्डार्वे चित्रकृतः न दिराष्ट्रं निर्मे वस्त ने पश्चित्रं पूरी न हुई थी. इस्तिष्ट् यह विद्यान दन गया। के पर में बोरी हरते. एउ और फिर मीमी के पर भी बोरी चरने समा । तिहा ने इसलिए जीर पिशाच उसकी अपने संबद्धार असको बहुत सुपारना चारा. यह बहु के बाब में यदे। पिक्सची के नायक ने विराहता ही सवा । अभिन, उसने अस्ता उसे देखकर बढ़ा-"सुन्दारा इस मफार

नादि सब मिल था। यह मिलता होते पर छोड़ दिया. एक बीच की के साथ

बा अभी बभी पिशःच बना था.



विधाय है। जाना — केनल तुम्हारी ही गन्ती नहीं है। इसके किए वो बस्तुतः निम्मेषार है, शुन उसे प्रजनकर महानो । "

पेताल ने यह प्रतानी एनाफा पूछा"राशा, पिकाम वन्द्र की किसे मनाना
वालिए: धन ने: खालन में जपने सनके
की अबनी बहिन की देनेकले मनीरथी
की: या नामबेनी की, जिसने उनकी गना
खनका मानफा, उसकी पासा-बोमा था।
बहि एसने एम सन्देश का जानकुमकर
निवासम न किया, ती तरा किर दुफके-दुकी
ही जानेगा।"

इस पर दिक्रमार्थ ने फदा—" परद के पिशाम दो जाने का कारण भागीरणी न थी। उसने अपने सकके की बी-सम्पत्तिकांते के पर में गोद दिया था। राग्में नोई मन्डी नदी है। इस्टबन ने अने इस देखा, उसने वरना मानू पर्व भी निवादा । परद, अपने पर में बना होने के करना, धनियों के पर बना होने के करना, पर्व नगृत इच्छाओं के माण भर गया और पिशाब हो समा । नामकेत्री के पोषण ने ही उसे ऐसा बनाया था । पर गर्ली नामकेत्री की भी न थी । उसके पांत फिल्मी ही आज्ञा से फर्क हाथे में । उसके पूर्ण हो जाने की बान मुनकत. वही उसके पाण न बले जाने, या सोजवर ही उसके पाण न बले जाने, या सोजवर ही उसके पाण न बले जाने, या सोजवर पाय के विशाब होने का असनी करना जादिनक्ष्मी यह सिद्ध का दिया दुला जाम भूगना था। विशाब को उसे ही लेगा करना जादिए ।"

राजा यह इस प्रकार भीन भेग होते ही। भेताल इस के मान जरूरन हो गया और फिर यह पर वा समार हुन्ता ।





ज्ञापान देश में एक युवन का। एक बार अब कर समुद्र के तह का स्कृत रहा का, तो असने एक गढ़े में एक महन्दी की बहुवहाते देता। की नाम में शासद बहुवहा ना की भी जीर केंग्र गई भी, बहुवहा नहीं भी पा रही थी।

शुनक को उस महन्ति को बेसलार द्या भाषी। उसने उसे उठाकर समुद्र में दाक दिया। यह सन्तृष्ट होत्स कि उसने यह प्राची की महत्त्वका की थी, कह जा रहा का कि लिसी ने पीसे से दुब्दम, " वहा ठहरी।"

वन उसने पीछे मुख्यत देखा, की एक भी विशाद दी। चैंकि असने उसकी पिटले करी न देखा था, इसल्पि पर गोम कि का किसी और की बुक्त गरी थी, आगे पश दिया "तुन्हें ही बुत्य नहीं हैं। जम ठहरी...." भी ने फिर बुत्यमा।

नह जाव्यर्थ बरुटा स्वाहर उसके पास गणा ।

"समुद्र के राजा ने हुने मेका है। इसकी एक कर्मकी बीट कान हुनने बचाकी है। हुने सुन्हें ज्यने देश के गाने के किए उन्होंने मेजा है। हुना इसके मेरे साथ आजों।" उसने क्या।

"मुझे को वैरना नदी जाता है। समुद्र राज्य में कैसे का मकता है।" पुरुष्क में बदा।

"तुम इस बान के लिए न उसे। में बस्तुत: महाती हैं। मेरी पीठ पर सवार ही बाजी, में तुम्हें बड़ों के बाजिया।" इसने बड़ा।



महाद्र गाणा में पुषक का लूथ आकिया विका । गुष्क और कामे हुए पुषक समुद्र राजा का कुछ दिन अतिथि रहा, किर प्रश्ने बद्धा कि वह अबने कर गाविस जना चारणा था, यह समुद्र के रहजा में बद्धा—" तुम हमारे होफ में में जो चड़ती, से माने, में बेट में दे द्वा

"मुझे सम्बद्धा कान के सिवाद पुष्ट नहीं गरिष्ट् : "क्या के पार्

"मन्द्र में दैसा एक ते एक ते। किन मां सुनने मोगा है, वे इसालेए उसे दे देशा है।" स्वकान असने एक आते में रखे कान को उठाकर उसे दे विका और महाले असनों का स्थानी की, यह ती उसके न्यू पर ने गई।

दुवन, समुद्र के विनारे देख था कि उसकी कुछ कि दिया से का महत्वकारण सुनाई दिया जा जारून के निया कि ने प्रका बच्चे कर रहे थे, उसने शंभ के समान उस मरणवाने कान को परन में रखा। तुरता वह अन्त एका विशिधाने क्या

' मनुष्य सोचाने हैं कि ये गड़े युद्धिमान हैं. पर ये कुछ नहीं जानते बानते ।

यह शुद्ध सान व. है. बरना यह कोई पहन में रसका सुना । नहीं दानन | वा बह कर, सिंहयांचे | मनुष निरे सूर्व है । जाने कर्त वाच्या में तथा स्वी और

बद सून युवप नेट यहा लाग्राच तुआ। की वालों में पोई मह स वा ।

या आक्ष्म प्रभूता पर उर रहा था थि है। तम कुर पोर्ड हमें क्षीरकृत साला

यासवाति काले में मुका यावर है जिस पर की करियों का अवस्थि कांच " करना संभा है। टेक्सन नासा पार करते हैं, सुनाई दिया उसने मन्त्रवाले काल की

का से तथ बुलाये गये, वर एक भी उद्यान्त्रम प्रति सहार्थ को दिला न कर का जाने में गया । या उप पन्या को गणा । किये ईका कोंगे : नय द्वा-धारु बहावा । यह अपने अपने अपने प्रेर की व्यक्ता ने दीला वेशनेताकी चीनाही करें। है । बरा की के बद समस्मान भया। सिद्धा अनेतन्त्रार के यह की दान अर बच्ची ना गरी थी, भी इस के शास पुरा भाषा पुनक भाने की जिन में उनकार, महन्य भी कीए पना भा, नह नक्षा नहीं ना कहा



दीक न दोगी।" ये कीजे नापरा ने बाते का रहे थे।

ब्द सोच कि अच्छा हुआ उसने ब्या सीप केंगा पड़ा है।" द्धन किया था. यह सीचे अमीन्यार के यर गया। यर के बाहर किया था - जो मेरी खनुषी की चिकित्सा करेगा, जो बह चाहेगा, वह दिया नावेमा । "

पुरुष ने जन्दर शास्त्र बाह्य--- भे रोगी करकी की विकित्स करणा ।

वार इकड़ा वृष्यु वेद्या देखा महाकर हैसे । ाट्य विस बीमारी यह पटा न जना गर्के. बह बह मूर्स टीला बरने आधा है।" वे आधार में कानापासी करने होंगे। पतन्तु वर्मान्दार, तो कोई वृद्ध अप्ता जमें देवन स्वया

नहीं देता, तब नक वसीन्दार की अवकी पुषक ने अन्दर जाकर रोगी को देखकर वहा-"व्य रोग नहीं है, बाउ है। जीव विसा हुई है। पर की छन पर

> तमीन्दार में अपने बीचरों की बुख्याकर धन प्रकारो । सन वृक्त वस में था। पत मूल्य के कप्पण मरा या रहा था। त्रमे खराकर क्ष दिया गया । बा क्ष पीयन रेंगने लगा । जब यह एक करूप रेका, हो जर्मान्यान की सदकी थी बिस्तरे वर उठ बेढी । अब बर दो करम रेसा नो का उठ सभी हुई। जब माँच अपने राम्ले बना गया, नी हमीन्द्रार की बढ़कों की वीबारी भी याती स्दी।

चुँकि सहबंधे का उसने ईटान किया बा, उसलिए वर्नान्द्रार ने जम पुरुष कर अवनी संस्थि से स्वान पर दिया !





जुदयसित का राजा उदयसेन क्या धर्मातमा वा । क्या के सुल मन्त्रीप के लिए उसने बहुत-मी कानव्यामें की किसी को भी भीता गांगने की कोई सकरत ने भी । राजा के इस अवहर करने से, राज्य में भीता मीताना बहुत कम ही गया था ।

अस देश के निकारियों में एक पुरक भा । तम से उसने होश सम्माना भा, उप से बह मील मेंगलार ही जीवन निर्वाह करता गत्या था । निकारियों को लेकां ने देना कन कर दिया था, इसरिय होते होते. उनको अपनी स्थित वहीं कहिन मानात होने मनी ।

एक दिन संबेर से बुकार शक, किशी ने उसको कीई बीख न दी : मूला, का राजनार्ग के एक पेड़ के तीने बैठकर, आने अनेवालों से भील भीगते जगा। पर विली में उसकी ओर र देखा। मगवान की वार्थमा बहुने से थी कायद कोती की नवर जन पर पढ़े, यह मोन्यन, यह गका प्रदेकर विकाने जगा— दे स्थमान, गरीब के भुद्दी कर दो, जावहरूके, मुखे की एक कीर भन्न, द्वासने, जनाने की कुछ वान

त्य भी किसी ने उसकी न सुनी।
नूला, तो भा ही किन्छ-किनाकर, यह केरोगा
भी होने समा। उसे नगनान पर गुस्शा
वाषा! ' जर मगनान! कर नर हमें ती ।
एतते हैं, को चैदा परवा है, क्या वह साने की की नहीं देशा ' पैदा किया है, क्यों नहीं किना है। क्या है, क्यों नहीं किना है। स्थान की ही सालिया है, क्यों नहीं किना है। सालिया हैने स्था।

इसी सम्बद्धाता, राजनको से पोते पर पद्धार बीचर जा शता था। उसने (भगारी प्री बान सुनी को को रोक रनका रनावर, इसके पास एकर प्रशः पाविको व गाविका है स्ते राज

म रीज किस्ति, पाणिया ॥ सैस्य उस सरकार को हो । '' किस्तुरी के करा

्यापे, बाह्यसम् परि को प्रारं शहरहरि भारतम्, तथा कोडि एके में गाविक देवा ति कराद्वारोति तिर कथा विभावता है त्या साक्षाति केहा :

ा चौर क्या प्रोदा । वह से घटा है, नक्षे कुछ क्योंने मंद्र नदी हैं कि क्या देत से नोव्य मात्र करें। हैं, यह बंदरे एक वैद्या की नदी देना हैं। " इंग्लिशी ने क्या । '' ग्ये, हम देश बद स्टा हैं। नी में देख हा। में स्थादेश बद स्टा हैं। नी एक इस हुझ है की, में तुम्हें हजार स्वतं हैंगा । महा भा चूम बेर की, में तुम्हें हो तमार राजे हैंगा । जानी अभि होते, में भाग गाम है हैंगा ।" राजा में पटा । पंचार नेंग चैसा नहीं जातिए । में





अक्रमान के को भी भी भूत्र साध्य था। उनके राता ने एक द्वारा हो। बुकि साट वर्ष के बढ़े दिना अस नहीं जाने हैं. उनस्य क्रक श्रीका एको यह । वर्षि उनके स्टाब में जिल्हान दिया सकर, नी बाली शीम मूल से हर सर्वेजी यह शहन सहर तर के क्षा को जबके एक दर के एक बादी के बंगल में पाइन होता नावें। यह आहा थीं र हो से माजा का पासन भावस्था था । इसल्बेल एक साठ वर्ष के पूरे गीती। ही बचने विकास की एम गाडी में जोड अवस्ति । इस अवस्ति वह बान की मा क विष्य न " गर रूपा। बने उस माटी में बुद्ध हिल ली जिल्हा रहने । फिर पर नरा पाने अ माना । बा गानी गान के नाथ पिना

यंत्र अन्ते वर स्थान सर या ही में हो रहे के लिए विकास । एवं ने सामसी सरफ स नेशक के एकों में अपे. को उसर वैहा बबार की का इस्तिया इसके दाय जनती उन्हें संस्थान पेपना अना

लक्षे क्षत्र रेड गई हो। क्षण में विकारिक हो है। बाई की नाईक का किन्ह जाप्त भा सके " जाएक से परा

ेन्द्रा बंदा, कहा एसा न हा तुन बारीस जाते सम्भा भाग आओ । " विता A THE

किय विका का उस पर जलनः मेन भा अनको गार्थ: में हो । जाने के लिए विक एक बुदे के बार साक पूरे दो गये। हे पर माधिश के जाता। असरी पर आणा के अनुस्तर एक सरकार अपने विता उसे गत उसकी देखते पासने समा।

राजा की मूर्लतायूर्ण आजा करेगी की
मही बुरी कर्गा। में क्षेत्र मी इस आजा
पर सिमने करें, किनके पिता अभी माठ
के नहीं हुए में मह देल मन्त्री ने राजा
में क्या—"मदाराज, आपकी आजा के
अनुसार देश का कितना क्षेक कल्यान
दुना है, यह तो नदी कहा जा सकता।
कान और अनुसनवाद कर जवात पर रहे
हैं, तो यूवकी की दीक रास्ते का ते
बानेवाते नहीं रही है।" राजा में इस
वात कर विभास नहीं किया। मन्त्री

ने बहा थि को उसने बहा था, उसे यह सिद्ध करके दिसावेगा। उसकी सरग्रह पर राजा ने एक पोक्का करवार्था। राज्य में हर किसी को रास्त्र में बनाई सी रिससों की कोने के किस

गाल की तस्ती कैसे बनावी जाये ! विभी की नागरिक की न पता लगा। उस पुषक ने जिसने अपने पिता की कदारी का पुषा रखा था, उससे पूछा—" गांगा की भाषा हो है कि रास्त्र से बनाई हुई एसिसर काई जाने. का कैसे सम्भन है गां



"रामी को उत्पान राम का दय देकर उसे विसे ही के जकर राजा की युक और परीक्षा थी। विसा भा " मिना में मकत दी।

जमापन, राजा को जहका दिसावी । राज्य में बढ़ बार और बोर्ड न बब गया।

ने उमकी वर्णमा करके उसकी नेज दिया थित उसने भन्ती से बढ़ा-"देसा. ज्वामन्त्री क्हों में ही नहां युवकों में नी है।

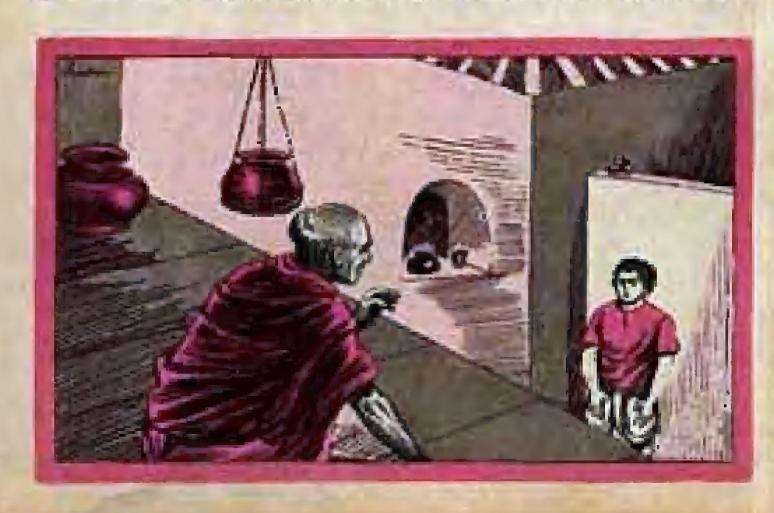
पुलक की भी कि नहीं. एक और मीयना

करवाहरी।" मन्त्री में नागरिकों को

" देश के सभी नागरिक, शंल के कोने उसने पिता के बढ़े जनुसार रहती में से नागा विकासकर राजा की सरकर विसामें।" पोपणा की गई।

यद विसा तरह किया या सकता हा, "बाद तुन बर्द नक्रमन्द हो ह" राजा कोई न जान मन्द्र । इस पुनक में, क्रिसने विना की शुना रखा था, पित पिता मे मेंडोर पर्या ।

"बेटा, एक होटे से नावत की एक " यह जानने के किए कि यह अक्रमन्दी अने ताने से बाप दो और उसे एक बाटी को दे दो । किर उसे कल में हाल



हों। यह धाल के छिद में से वावल के बाब बाहर निवास आवेगी। चावस मा शास्ता भी वन बहुवेगा ; पित बावल की तामें से अंकि देना और संस्थ की ले गावार गाजा की किया जाना ।" विसा d 37" 1

पुषक ने जैसे रिक्ता ने करा था जैसे की विद्या । नामें के साथ करने और को से जायत गावा को नियास्त . नियाय अयोक कोई और यह दरके स भावा वा । गडा, गुवक भी देखकर बस्य स्तार स्भा

· विक्त वर्ग स्ट्रारिये, स्ट्रायम गाँउ ही ग्राच्य की बच्ची स्टार्थ था . में ब्हेंगा कान बार्क के लिए प्रेयत वर्श हों। " बर्गी ते का क

बन्धी ने अब पुछलांछ की दी युवक ने HE TE BE

" महाप्रमु, मेरा पिता वष्त अक्रमन्द है। मुझे नहें पेम से देखता था। परन्त उसको माठ वर्ष होते ही, में "पष्टि पति" षादी - लोडने गया । का गांधसी सस्ते े बराव में बार्ड, में सामना तर शानियाँ नोप्यत राजने गये । यह देल में उन्हें पारी में न तेर भगा और उनकी पर कायन अस्त्री एका यह रहा है। आबी अक्टर पर ही में शब की रस्ती काम बा. जीर जब शंख में छेड फरने का उपाय भी जन्मोने बनावा था ।" युवार ने पता ।

का सुनते ही राजा पर श्रामीद्व हुआ। इसमें जन्मी अनु है किये हैं, है यह उसी दिन अपने गंपनी आहा गई कर दी। तब से "मधिप म " को पुनर्जेस्य लगावन (महत्व्रिक सनावा जामा है।





उज्ज्यमी नगर के राजा के मर जाने के बाद असके काके मेघलना ने जनता राज्याभिषेक करवामा । यह राजा वन गया, नाम दी नेपायन्त या । वेसे वह या निरा मुखं। बसका बचनन का एक नित्र खा, विस्तवा नाम सनुद्धि मा। बहा भी ज्याने गांग के मनुरूप न था। क्योंकि उसमें मी बुद्धि न थी।

के अनुरूप थी। उसका नाम सन्देशी का जीर इसे दर नात पर सन्देर दोता था। गुल राजा के एक सनर्थ मन्त्री मा । इक्का साम पुलसाक था। मेचावन्त के पीछे इंसा भी करते। 🚾 साथ ही बड़े गमें थे। गुलपाल ने दति के सामने आयी।

मेथायन्त्र की गुरू रामी अपने नाम

असने कन्त्री वह से ल्यानयत है जिया। नवीं हर एक जंगक में एक आक्रम बनाकर उनमें भगवान का ध्यान करता विधिन्त रहते समा।

गुजपाल का बढ़ा जाना मेचावन्त के किए जच्चा था । यदि गुणपाळ का मानी रहता, हो यह अवसी हच्छानुसार पुछ न कर पाता । उसने भयने बाल निय, सुपृद्धि को मन्त्री बनाया और यह मनमानी राज्य करने बना। राजा मन्त्री निरुद्धत जो कर्म करते उस पर परवारी मानः हेमा करते । जनकी बेज्ज्जी पर वे उनकी पीठ

राजा होते ही, उसने सीना कि राज्य के एक रोज का मेथायन्त पर पहुँचा, तो अनको धिन, जनकी परस्पराधि सन सन राजा उसकी कर्ता सन्देशी एक सन्देश लेकर



" बची जी मूख बिन्हें बजते हैं " बे कीती बोले हैं। जब भाग बनकार में थे. नो जिसी का "सूर्य" और "मूर्जी" करकर कोमना सुनाव विद्या । " सन्देही THE REAL PROPERTY.

"मर्ख ही, मैंने बहुत बार सुना है। पर नर्स कीसे डोले हैं. ब्ह की नहीं देला है । बह बात सुबुद्धि में पूछो, बह बतायेगा ।" नेपायन्त ने पदाः ।

" व्यानन्त्री, हो मुखं बहुतावे बहते हैं. वे कैने होते हैं, में वह नानना आहता ति. बनाजी । "

' मारागाज, देने की मूर्क और सूजा सब्ब की सुने हैं। इस ने कैसे लोते हैं। का कर्ना मेंने नहीं देशा है।" समुद्धि ने पदा ।

" अच्छा, तो तुन्ते समाह बर का गमय देश हैं । इस बीच वर्ती से वीच मुसी की पकरका सानी ! वे बैजे होते हैं, हम मच्ची देखना है। इस संस्य में बाद तान वाच मुली की न कावे, भी तुम्बारा सिर कटवायर क्योंकी पर छरका दिना जासेना ।" नेपायन्त में बहु। ।

स्थिति वह सुगलर हर गया । मूर्ल वैसी होते हैं और बादों गहते हैं, बह नहीं बानता था। इसस्य, बत यह भी न शानना या कि वे कहा रहते थे। बंदि पविचा मन्त्री नुवापाल होता, तो बा काम विनये में बन देना।

अगसे दिन दरबार में सबुद्धि को देखते गुजवार का नाम पाद जाते दी, दी नेपायन्त को सन्देही का सन्देह पाद समुद्धि की बान ने अन आवी। पुरत हो भाषा। उसने सुनुद्धि से पद्या- यह गानी की विना परवाह मिले,

आक्रम में प्रहेबक्त गुजन्छ की भारी बात बनावी । " इन रांच मूर्नों की देवने का बाम अप्य दी को करना वर्तमा, नहीं तो मुझे बार विका आवेशा " बा अर्थेड ti ur .

" को है बाल नहीं बेटा. - मी लुम्ह के सम्बद्धार र जेला करी तो पूरा चार्ष गन्दवार श्वाचाल सुन्हें की न्यम लेका एक प्राप्त पहिले भी उन्होंने देखा कि जायेगर ।" परवाने ने कहा :

गुनपात को देखन निवक पहा । उसके एक पा एक अध्य से यह नहा पा भीर पायाने का पांच, इस लोगों को भाग बुझाने के लिए नुसाना ती भटना वा सवान के रुपरे तरफ तेन बात रहा था।

> भुष्यकाल ने उसे देशकर पुरा — " और जब पर एक नरफर जवा जा रहा है, तो बस्ती जीत नी स्था भला रहे हो : "

लक्ष्य गे हन्तर की बहा ग्रन्ता: बायक के राजने में दी सिंग अपने ।" अपने की महदान माजन रोने हैं ! नज़ ने है, इस्म अप्योग श्रीनर्क वर्षि गांच में र अधारी की और चंड बरा 1 अब वे जान निकादी गई, तो बकना सतन ही





"हम राजभानी की और जा रहे है, क्या इमारे साथ आओगे—तुन्हें राजा से ईनाम विस्ता हेंगे।" गुणपास ने कहा।

पर बळानेवामा इसके किए मान ग्रमा और उनके भाष नियळ पदा ।

रिनो ससते-बढते एक और गाँव में पहुँचे। वहाँ एक कारमी, अपने घर से पुछ दूरी पर के फुँचे से पानी साहत, अपने जामन के कुँचे में बात रहा था— साबद यह जपना कुँमा, यूँ मरना पाइसा था। " भरे मार्च, बनी एक बूँगे से पानी निकासका, धुनरे सुँगे में बान रहे हो।" मुख्याल ने मुख्य ।

...........

द्रा पर एम आवनी ने कहा—" और क्या किया गये। इस गरमी के करम हमारे पर का फ़ेंश्व सूख गया है। मेरी पत्नी करी जाएसी है। सनी स्वने के लिय पर से बाहर नहीं जायेगी। इसकिए और वर के की में डाल स्वा है।"

"रम राजधानी जा रहे हैं। क्या रमारे साथ भागोंथे! राजा से दुन्हें चच्छा रेनाम दिख्यांचेते।" सुलपाल से पन्छ।

बह अन्दर्भी भी इसके किए मान गर्स भीर उनके साम कर पदा। जब वे राजपानी के पत्ता जाने तते, थी सुनुद्धि ने सुजनाम से पूजा—"हम दी मूर्ज ही शो से जा रहे हैं—राजा ने शो पाँच पूजी की जाने के किए कहा था।"

"इतनी वही राज्यानी में गुली की वना वसी है! बाबी हमें वही निक नावेंगे। पीच मुली को राज्ञा को विकास मेरी विक्नेवारी है....टीक!" गुलपान मेरी विक्नेवारी है....टीक!" गुलपान मे बहा।

दोनों पूली को साथ केवर सुनुद्धि भीर कुणबाह राजा के परवार में पालि ।

गेषायना ने सुनुद्धि को देखका पता-" और रहनी अल्दी भा गरे । पाँच पूर्वी को काने को कहा था. सवर तम तो कीन ही साबे हो । जरे, वे पुराने मन्त्री ही माध्य होते हैं। क्या में भी मूर्ल हैं !" दरवारी सब र्षेथ पड़े। सुनुद्धि ने प्यगते हुए यहा-मुली ची पपतकर लाम है।"

विका बाबे-क्यों।" मेपावना ने गुग्ने में गुड़ा। " महाराज जार जिन पाँच मुली को बेकना बाबते हैं, में उन्हें विस्ताता है। पर्शित इन दोनों के बारे में ता सुनिये...." वात्का, उसमें पर उन्होंनाहे के बारे में और पानी काफर ईंपे में बाड्नेवाले के गारे में सविवस्य बनाया ।

जब यह उनकी मुस्तिता के बारे में " महाराज, में जनकी सहाकता से इन दो बता रहा था, तो दरवास्थि में तालियां पीरकर बहुदान किया।

" अधर तीन और यूर्ज नहीं जाये हैं, मेथायन्त को यह विस्तृत न बेंचा। मा क्या क्ष्में किए हनका गथा करना उसने मुख्यान से बढ़ा-" सैर, हनकी बात



होता वीजिए। बाकी वीन मुखी की. कर्ना ही दिसाइचे।"

"इन गेनों को जान जानते ही है।
जानने गढ़ा कि तीन गढ़ा पकत नाजे!
जीर बा ठीक उसर न है, पाणा और स्वयं
स्वों को मोज मी न गह्या। मेरी कराबता
पाननेवाला जायका स्टालस्की ही एक नाने
है। जापकी राजी एक जीर पूर्ण है,
जिसने यह द्या या कि मूर्स केने रेटने है
भीर उसके पूर्णने पर जिसने जयने नजानाथी
को नूस्ते हैंडकर लाने के किए ही न क्या,
विस्क यह धकती ही कि जमर के एक
समाद में न स्वांचे क्या, तो तिर बदवा
हैंगा, उनसे बढ़ा मूर्ल इस संस्टर में कोई
न होगा।" मुख्याल ने पता।

यह जब पूँ एक एक साथ शिनता जाता या, तो दरवारी तालियाँ पीटते जाते में । क्तिर उन्होंने "महाकन्त्री गुणपाण की तम" कर जयजपणपुर किया ।

मेशायन्त को गुणवाल की बात स्थापन पड़ा मुख्या जाया। पर पत देल कि दरपालियों ने उनकी नहह, उनकी पत्नी और बन्दी की भी मुखें करार दिवा का, पुस्ता पत्न कर, उसने पड़ा—" आपने जो पढ़ा है, उसमें हुए सचाई । पहन है। में भारता है कि भाग किर मस्त्री पत्र स्वीकार करें और मुख्ये दीक सरा गण्य करवायें।"

"व वाद्यमधी हो गया है। नै मना बका कर्मगा इस मन्त्री पर का। व्य बावना छोएकर कि मुखं देशो हैं तो हैं— यह बानिये कि नुस्तित क्या होती है और इस प्रकार गान कीर्किए कि प्रका सुस्ती हो।" पर यह छर, गुणधान अपने जाकम भना गमा।





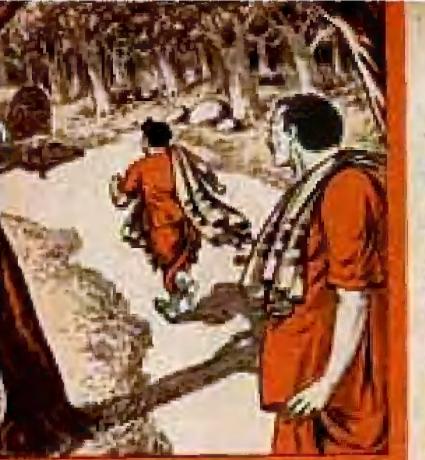
एक वर्षों की मर्थकर श्रीमारी कैटने न होना वा। स्मी । दो रोज वर्ष न कुछ स्माते, न खेळते क्यते ही, यह से यह रहते। तीकी दिन जर भारता । और टीन दिन के जार के बाद बच्चे मर जाते।

हार ज्या की विकिता करनेवाला वैध पात ज्वर की शिकित्सा का सकता था। दर उस वैच को छाते में स्वर्ग अधिक होता था। जो व्ह सर्व न उठा सकते बे, वे बच्ची की किवपूर के जाते. बैच की विलाकर क्यां है जाते । क्यों की किना देखे. वैद्य दवा न दिवा करता था। ज्वर के पास ने जाकर नमे दिवाला है। कमा भाने ने पहिछे ही विकित्ना करनी होती करनी लाग नरा दोने ?"

धाक बार पंचालांक महर्ग रहता था, यहां भी । एवर आने पर किसी द्वा का जलर

एक दिन ऐसा लगा, जैसे पणाताल के करके की का भानेगाता में । प्रशासात की पत्नी ने तुरत बचे की चक्रवेच के पता मे बाने के किए कहा । परन्तु उसके पास इस समय जयमी गावी म भी । जिसी उस गाँव में कोई न या। दस मील दूर और को अपने क्ये को देव के दान ले शिवपुर में रहेनेवाले बरूबेच भान का केच आता या असकी प्रमानात ने अवनी गावी दे दी दी। इमिलिय (सामान ने वेच को अपने पर बुटाकर बन्ने की विलास पाना। इतने ने पहास के सोमसाल में भारतन

ाडा पंजाकाल जी हमारे लाके की बह ज्वर जाना मादम दोना है। बैद



व्यावस्त ने वजा कि उसके मामने भी वहीं सनस्या भी। "तो वजे, वैद्य की ही कुछ करें ।" सोमकात ने वजा।

पकासास भी खुदा हुना भि उसकी भाव निक रामा था। दोनो किंक्पुर की नोर नते। पुग्रा हुन जाने के बाद भोगवान ने क्या—"पदि इस सदक भवक गर्वे, तो दक्त गीन का फासना है। नर्वेद पहाद की क्लबंदी से वर्षे दो मीन कन होंगे।"

े हो नजें, पगर्वटी से ही करें।" पनासक ने गरा।

इतने में सदक पर एक बोदा गानी इनकी
चार करके तेनी से गई। उसे एक पुष्क
चना रही था। एक पुष्की गानी में बैटी
थी। गानी स्वद्ध दूर म गई थी कि एक
यह । गानी में बैटी भी बिकाई—" बदद करो, मदद करो।" वह बान्त निर्मन-सा
था। दूरी पर कुछ कोचदियों थी। जार्डमहर सुनते ही पजाकाल मानी थी जीर नागा और सोमलाल उसे देख लिया। पजाकाल में योकर ना येन्स, तो गानी होफनेनाला पुषक बनाम छोड़फर गानी में शुकरकर, वाली पकाकर करात रहा था। " व्यास, प्यास।"

"में मेरे पति हैं। पकावक शबीयता किया मई। चटने समय जो भोजन किया मा सामद उसने फोई लगावी थी। पेट दर्व बनाया! प्यास मिटाने के लिए होटें में मेंने पानी ग्या। पर गाड़ी दिया और सारा पानी नीचे पुरुक गया। यही नहीं भारा पानी नीचे पुरुक गया। यही नहीं मा रहे हैं। पदि का दौता, तो बोबा पानी ने माला। भार तरा इस कोटें में पेट्रवानी यनके पानी ना दीजिये। कमी भाषात प्रहानी यनके पानी ना दीजिये। कमी भाषात प्रहानी यनके पानी ना दीजिये। में पेट्रवानी यनके पानी ना दीजिये। में पेट्रवानी यनके पानी ना दोजिये। में पेट्रवानी यनके पानी ना दोजिये। में पेट्रवानी यनके पानी ना प्रहेंगी।" साड़ी में पेट्रवानी में प्रशास से पट्टा।

"तमें कर्ता नामा है।" गोमकाक ने उसकी काद दिखाया। वरन्तु धनान्यक ने उसकी न सुनी भीत केटा तेन्द्र दूर दिलाई देनेवाले मन्द्रित की भेडर महना।

"नाम, तुम्हारे साथ वस वही जायत है।" यह सोचकर सोमसान में बजा, "मण्या तो में नारवा हैं।" यह वह बज्रुकर पगडण्डी पर यज दिया।

पलानाक बान की तरा भागा भागा गया। पूजारी के घर से पानी केकर गाड़ी के पास आपिस ना गया: मुनपा की त्रमीयत पानी पीकर एक सुबरी। वरन्तु उसका पेट दर्द कम न तुआ। उसने गाड़ी में ही केटबन कहा—"अब में गाड़ी नहीं चला सकता!" वह शिवपुर वमीन्दार का सबका मा । वह जननी पत्नी की उसके मायके से अपने पर ने

"आप आराम चौकिए। मैं नाड़ी हॉफ्कर चारको पर पहुँचापन किर अपना कान देखूँगा।" पत्रात्मक ने पद्या।

"इससे कड़ी जारका काम की मही विगद जायेगा:" कोटे समीन्दार की पत्नी में पूछा।



"मैं किन्दुर में सदनेवाले चरुवैध के पास ही जा रहा हैं। मेरे कड़के की शासद विष कार हो सवा है।" प्रमान्त्रक ने पदा।

"दम भी चूंकि शिलपुर जा रहे हैं।
इसर्वेक्स आपको कोई असुविधा न होगी।"
उसने गया। प्रमान्धक तेती से धाडी प्रकाकर
शिलपुर गया और गाड़ी अमीन्दार के घर
रोकी। तनीन्दार पर सनका पत्नी के
महम गाड़ी से उत्तरा और उसने एक
बीकर की बुटरकर पता—"इन्हें चनकेम
के पर से जाओ। वैध पत्ने इनके साथ
इनके पर से जाओ। वैध पत्ने इनके साथ

हो। जाने पर फिर नेच की अनके पर संबंध्य वाकी (*

उसी गाडी में प्रशासन बढ़ ग्रेय के पर के नामने खड़ी देख, देव मागा भाना जाया । यज्ञानात का काम जानका रोशियो की कुछ देन उत्तरने के स्थित कहा. का गादी में पत्राताल के भाष निकल पहा । वैध के जाने के कुछ देर बाद सोमजाट भका बादा बढ़ा पहुँचा। गाने में इसे डोकरें अमें । वर्डि चुन समें भीर उन का इतने यह उठावत पहुँचा, तो सुना कि वैध या में नहीं है और वे गाड़ी में वड़ी गर्वे हैं। उसके आने की रन्तजार करता स्तानकान वर्डी के गणा।

हम बीच वैच पलाळाड के घर पहुंचा। उसके सर्क को देखा । दका दी । मोजन आधी रात के गमम काने कर बहुँचा ।

आदि के बारे में बणावा । किर पनाकार बैच को लोमजात के कर ते गया। उसके लक्षे की भी चिकित्सा करवामी । वैध की धर वया । तर्मान्यार की गाड़ी अपने जो फुछ देखा देशा था. उसने स्वदं दिया । काम दीने ही बैच, बमीन्दार की गाड़ी में अबने पर आ गमा और फिर उसने गाडी वर्नीन्दार के यहाँ भेज दी :

> गोमध्यक ने ज्ये देखकर काने गांव और काम भावि के बारे में बताया।

> " में जभी तुष्यमें भाष से आ रहा 🖁 । अनुको अबके और आपके सहके को भी दवा देवत जा रहा है।" वैध ने क्या ।

> शोमकाक ने गोचा कि चनात्मक की होटकर जाने के कारण उसे अच्छी सजा मिली भी। का वैश मसीटला मसीटला





तेता, र वचनवारी के रूप में विका

देने के जिए अन्वस्तक युवकों की भूनता. अवनी नीकरी में से केना और उनकी बन्धी, कोजाधिकारी, नगर १६क, स्थाजाधिकारी जीर सेनावति के बीचे काव बीखने के **डिया व्यवस्था का देता । कालकम में वे** युवक, बहे-बहे पत्री पर भा जाते । परीक्षाये, पाणिकत्य, गाणित, तथे जावि छास्रो भेटेर वक किया में भी की आती।

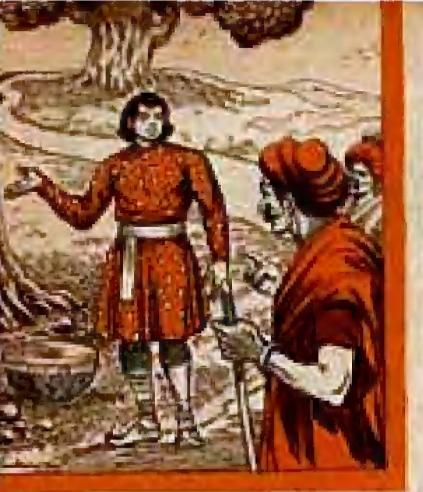
एक नाम, राजा ने तरने गता काम सिमाने के किए दी मुनकों की जुना । एक का नाम विकय या भीर कुमरे का नाम निमल था। दीनों नीति शास और सर्फ क्षाच्य में सलान ज्ञाम रखते ये । इस्रारूप

इस्तालम देश का गाना, इन सांस इन्ह्याम अच्छा था, यह जानने के लिए सम्बंध ने उनको एक वरीका दी ।

> जनने विनस और विजय की, एक एक टीकरा दिया और दीनों की, एक एक गांव जाने के लिए बढ़ा और उनमें ताकीय की कि वे फलाने फलाने अलमी की वे दे दे और उनमें उनकी स्मीत से से। उसने बहु भी बहु। कि वे गांव उतने रान के।

प्ता के काम पर, विश्वम और विस्त जनग-जनम शक्ते वर यथे।

बिन्दल, मन्त्री के बताचे गण्ने पर दुपहर त्क चलना रहा । जिस साथ में पहुँचाना या, वह तो सर जाया ही नहीं, उम्र राष्ट्री में और कोई गांव भी न जावा और एव प्रक्ति और बीलिक आन में, बीन नविक मंदनी जा रही थी। देर में मूल तम



रही थी। भीतमान्य से उसे रास्ते के पास एक बावती दिसादे दी। बद उसमें उत्तरा। ठंडा पानी पीकन, हाथ सेंद्र भीकर, उसर आधार, एक पेड़ के मीचे बैठकर, वह सीचने स्था कि क्या पित्या जाने!

इतने में, उसे राज्ते पर कोई जाता विसाई दिया। उसने उससे पूछा कि बाजी गाँव किन्तुनी पुर था। सूर्योग्स तक पहुँच बाजीने, उसने बताया, बच उसने पूछा कि पास कोई गाँव था। से उसने बटा करी। -

विनक की मन्त्री पर सुस्ता जाना।
जान एक दिन के दूरी के गाँव नेना है,
तो रास्ते में क्या उसकी मीजन की क्यम्या
मही करनी थी। व्य सीच कि कही उसकी
मीजन भी दीकरे में न हो, उसने दीकरा
लेकर देना।

उसमें कुछ मदरियों भी, उस पर एक कामत था, उस पर का दिग्या था।

" इस दोषारे में व ०० मटरियाँ हैं। इसकी मासि की गुजना वीजिए।"

विमत से यह शांच कि वदी ये जविक न हो, उनको निरुक्त देखा, तीन हो। ही के, एक मी जविक न था।

"को कलाना की शिक्षा है रहा है, वर्षों उसकी महारेषों होने का कान्य देता है यह मन्त्री! या को जिल्लता भी नहीं नानता।" सोचकर विमन होकरे में से पन्त्रह महारेषों केवर स्ता गया। विमन का क्यान या कि नगर रास्ते में मूल से पन्त्रह बहारियों साली, सो बना मन्त्री उसका यहा मोट देगा।

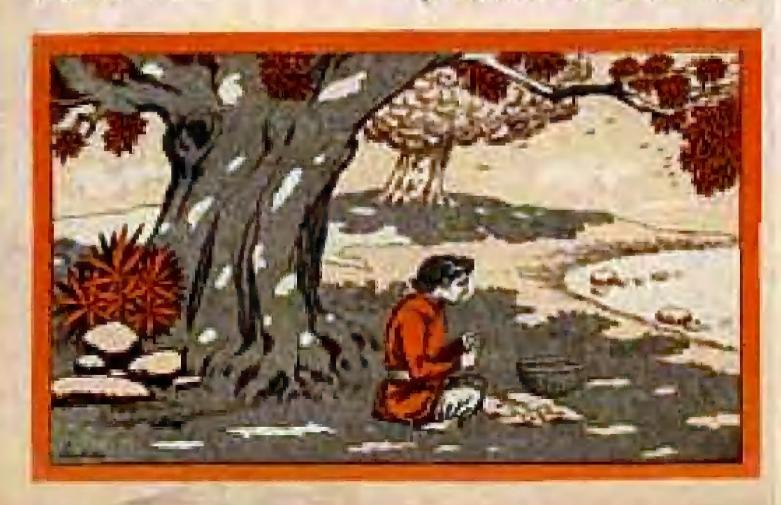
न्या के मिट माने पर, मकरन दूर होने पर निमन चलता-भकता, उस गाँव में चर्तुचा, महाँ उसे पहुँचना था। मन्त्री ने जुला जापा

अब अंक्षे: माचम गुजा कि यह काम में सदिवा जब विन्दी, तो जनमें दीक ३०० तक उस गाँव तथ न पहुँच संकेगा. मटरियों थी। एक भी न्यावह न थी। HAT I

का एक भीन मा।

को महरिया नेजी थी, उनको वहाँ देकर, विजय ने भी विमन की तरहा, नह बन्धे २८५ महरियों भी रसीव कियर सोचवर कि मायर आवा भोडन होकर में ही था, टीकरा सोलबर देखा । उसने भी दुसरे गाँव के किए जो निवला था, वहीं कागज था-३०० महरियों नेजी या वह विक्य मी द्यार तक यहता हहा। रही है, इनके मिलने की रसीह है। शेकर

तो उसके स्वयने भी गुस की संगरना विवय ज्यापन्य था। उसने थक एक बढरी निकासी और उसके उसर का माग उसने सीचा कि मन्त्री का भीजन के श्रीवकत, बाहर रसने समा । जब उनकी बारे ने कुछ न बताना भी शासद परीका इस तरह बरकी महरिया किल गई, लो दन्हें खाकर, रास के तालक में पानी



वीकर-किर वसरा-वस्था सम्बन्धान कर पहेचा जिनको देना था. उनको टोयले देखा, नर्माद ले औं: कि १०० महानियाँ मिली थीं। विमल के तावे पूर् एक में परीक्षा क्सी। २८५ महरियां यद्ये स्वीच हो। भी ।

" पाइट महरिया नवा हो। " मार्था ने बिहर से पूका

"रास्ते में मुद्रो भूख सभी और मैंनी अपने मन व नीर पर उनकी के किया।" भिमान ने कहा !

मन्त्री ने बढ़ा । विजय की नीन सी और इर करके आओ ।"

बटरियो की श्रमीक देख बढ जुड़ा हुआ। जिन भी उसने उनके श्रीकिक ज्ञान को ज्ञानने के किए एक और

उसने उनके लिए दी बादन नेकेन करनामे और उनमें दो पात्र रसवाचे। किर निवड बीर बिवय को बुकाकर बढ़ा — " बोनी बावनी में दो दो पाछ है । दोनी में बी राज है। इसमें से एक पान जबन्ती राजा की और दूसरा एक भंग " यता होने में कोई गलती नहीं है ।" राजा की देवन उमारे मैकीपूर्ण सम्बन्धी कर



विभव में अंग गाम और विजय ने अवन्ती बगर जाने का निवास किया। विमन जान की राजधानी में गया और उसने का बहुकर कि मारुव राज्य से वह मेंट लेकर कि इसने उसे केने से इसकार कर दिया है।" गया था, राजा के वर्शन किये। उसने राख़ का पान प्रमाने सामने रख दिया ।

* क्या है यह ! ** अंग राजा से प्**रा** । " गाम" विमत्त ने पता ।

"दुना नीच को केंद्र में दात दो।" राजा चितामा । सन्त्री ने राजा की रोका । उमें मलान्य कि विमन की क पान विनेवाका मारूव का मन्त्री था और यह रास्ते में ही सीच किया कि कैसे वह राख

बर्दा क्लीका के तिल आया हुआ का यह भागकर विमाल के चड़ा-"तुम संपने यात्र को लेकर चले जानो । मन्त्री मे कदना

बिगर की जान जाते जाते क्यों । बह अस्य गार्थ कर समार हो शक्त और रास का पत्न तेका गापिस चक्र पदा ।

इस बील विश्वय भी लवन्ती राज्य के यास गया । महः तस्य ही जान गया कि यन्त्री ने उसकी परीक्षा के लिए ही यह कटिंग करम सीपा या । इसकिए इसने



मेंट पारेगा।

"महाराज, में यादम देश से एक छोटी मेट साया हैं। हमारे राजा और मन्त्री ने जन्मी मंगल कामलाने नेनी है। और इस पान के स्तम की भागकी देने के थ्यि, कदा है। दास ही ने इमारे राहा ने फार्मी पात्रा की जीर पर्दा नदा यह किया। या उस याकुण्ड की मस्त्र है । यह मस्त्र मृत मेती का निवारण फरेगी। नापको जीर नापकी मना को स्वास्थ्य और देखने मदान भरेगी। आपने और उसमें नैत्रीपूर्ण सम्बन्ध बढ़ें, इस दृष्टि से भावके पास बा 聖 衛 1"

भवन्ती राज्य बदा खुद्य हुआ । उसमे उस पाच को अपने अन्तःपुर में मेज दिया।

वर पाप, जिस प्रकार अवस्ती के राजा को जिसम का उसने जातिएम किया और जब मह मारिस जाने मना, उसके किए साइज अवन्ती राजा ने समस्कार करके कहा- के राजा और मन्त्री के जिल बहुत-से तपहार मेजे ।

> भिमक तब तक राख का पाण केवर वानिस जा गया था। उसने मन्त्री की देसकर करा—"यदि राजा की शौकरी रतनी विकरों और करिनाइमों से मरी है तो मुखे क्षेत्र पीक्षिये।" पर परापर बह अपने गाँव सका गणा ।

> फिर विजय ने जानर राजा और मन्त्री को जननी रागा के दिये हुए उपहार दिने और यतामा कि मेती यह सच्छनापूर्वक यदम यह आदा था। फिर उसने पृका-" बहामन्त्री ! जब जीर क्या परीक्षा है ! "

> "कोई नदी, जान ही तुन नीवरी में भा सकते हो।" सन्ती ने बढ़ा ।





बारका, एक दल्लान व राज के प्रश बसा सरा, ने कम्बनमें सुन के उपका ं पता । हो तक्ष हहा देव गए। वहा ीत बुद्ध भूमि के चल्या मुद्रा । उन्हें अपने आने रक्ष अवस्था कि अवसे हाल है कोई। टांबबार - या अनी सुन्ते में एपः अवस्था सुराज के लिया |

साथ शहरको को की किएक बहुत था । स्था । यह जिस् सपा ।

अन्तर्वाती का बार्क विवेद - बहुत्व अन्तर्वाती उद्यान सामने की . का इन्हेंक्स अन्या देखा करके र अपन वहि प्रदेश हैं । यह अर्थ अस् १

> कर देश करून में कृतिकार की सुरुप्यान्य विकास और उस वर्ष वर्ष होते । प्रस्ता है। सभी और प्रवासन है। दिलाहर वस्त्राह स नहें। यह बात्रा की साना. राम की जीव बर्धने छन्। ।

कह माने के यह महरों में के खेंची अपने के एक का का महत्र पहन हुने ही। दिश्यको देखा, उसे साले समार प्रस्थायों उन्नामी कर अधा । इस सोह के कारण ने यह को न बचा कि नद राज्य के मुख्यकों के हुए से जानाये निकटते।



करम्बद्धां हिन न ४५ नहां हो, यह बोच कल्लान से डासर' की उस पर सर्दे बंधने के किया करता परस्य उस बासार को करमकर्त से निर्मादक की उपर त्या विषा ।

वर देश सङ्ख्यात्री के यान भाषे । बुरुक्तर्स्त एर्न्स को सार सामा समया गाम ने प्राथ साम्या ।

अप में की हैल्बर कहा " कुम्दवर्ग दर्ग सर आभी, तुमने उन्द्र की जीना भा न, में इस्टू करा है। समा है। से इस्टाम किए दो अर्थ करह बार्ज से वार्ट एक ध्रुष्ट में भार दवा ""

.

ाने के कोई विशेष करा है। स क्यार्थ हु, न स्थर, न यार्थी, आर्थिय ही. कुम्बनको 🛔 । देखें, कुम्बन्ध वर्ग किनदा है। उनके बाद एक्ट्रे का आईना।" 型的研究 电线工

युष है एक्सी रूप कुष्पार्क के जुड़ न विना । मंद्र : ये नाम के प्राप्त कुली को भार प्राप्ति कही को सभे हैं। बुरव्यक्ती पर व्यर्थ गये । यह सद्धा इप कार भुमाना गाना कि यान के २७ वर्गा से र्धी क्षेत्रमा गर्भा ।

नव गाम के नामनवार्य का बा*न्*याल का अधेक किया। उन्हें काकक्ष्म मा पट राष्ट्र कार दिया, जिससे उनने मुहसर रबार रुपा या हमापन्ने भीर से स्थानन जब उपनार राध भित्रा, वो ध्यके कीनी कडू बन्दर जुनसम्बद्ध यह गर्थ ।

हात. द्राप्त के नहें अभे 👭 कुन्ध्य**्**री ने स्थार तथा में एक मरवास स्थापन बान पुर इनका विकास

एम में है-दाल में प्रस्करण के दुसर ताल कर की कार दिया ।

लग्नामां के के कार जिले

मुख्यको धर्मक द्वा भाग हुए हर है। पदा जब स्थका सुना भा हुँद कहा स्थल स्टा गा, सम से स्थकि हुन्द में नात दोड़े पुरुष्टको जब स्वीदेश राजि वह स्थिति में भा, तो सम ने दक दिन्द से से सुकानस्थी यह रिस्ट बहर दिवा

व्यवस्थाति वस्तपूर्ण के प्रश्ते ही, राक्षम् में बाद्यसम्म भन स्था। चारण के हुँह विक में विच मद असर ही कि स्वाधित स्था के साथ भाग नक था। राज्य भारत है है सुरहा रहा ही कि विक गई के साथ सुन्ते होने स्था।

नाई के लिए दूर्वा देशों गयन की ब भागन देश शिक्षा, भीनकार, देशायनका नश्यनका नहीं है, स्थापन देश मोद्धा पुट के लिए लिएन गरे।

ित राष्ट्रच क्षेत्र ताराम मेगावो में होते यह होने कार । क्ष्युनक ब्रह्म मेगावा में भूम सवा श्रीत अपंद शब्दों से कान्या को सैनाता की समझ में वाको त्या । संस्कृति ने भगद की कार्यन युक्त प्रजी के क्षित्र ने भगद की कार्यन युक्त प्रजी

भागवर हे सराजनक के सामने उत्पादन पहला गाइन सामें पीर संगापण बादना

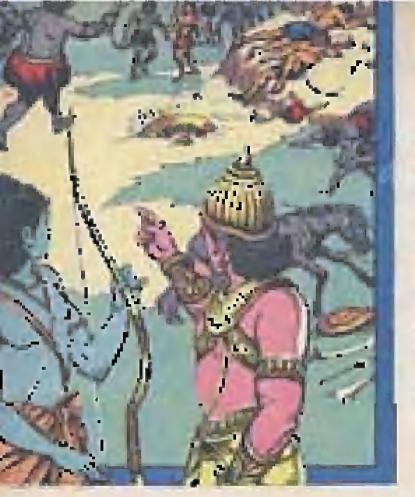


धर सम्बेग छात्र्योग १४८वे ८३० छात्रके सुक्ति सम्बन्ध

नशास्त्रक में ध्रमी भक्ते को जगान वर्ष हाली पर भारत वह स्टक्त देख गण । प्रयद्ध से व्य स्टाप्ट्य के पांदे का अपने दाख में स्वरूप, भी दक्तक पेटर इस्टब्स कि दाख , भरणनक ने वस प्रदेश समार्थ भारत कराइ के किए पर नेहर स्थार भीन नगर पांचे स्टाप्ट

े भंग, इसके उनका यह है : " बांकर रोजात, बगाव में सब लहेंद्र बांग्यहर महास्थान हो है पर मार्ग, बद सहस उनस्था दर गया

.



पूर देशक अहोत्तम, देश जन्म, देशक से अगर ज भागन किया : इन सीना के अप लिंगड अवस्था अन् बरा क्षा, सं इंस्ट्रांस भी सीच असी स्ट्रांस क विष् असे ।

ानिक की यह देशा हमते दन्या ने वियानकार की उसका कियु की कार आज दिया । बारी तर हो र के राष्ट्र गर्वा स 464 1011

नक पुद्र किया और उसकी समयक से मेर बासर केवा केर यह जाया के नष्ट हर उसकी वक्तन कार हो। व



इस दीन राख्यस दीरी ने एक अनामानी हे जराज एटा देखा पर बाहर पर इन्स्य किया, के प्रकास कान के अपने कीय इसमें भागित्य । यजीव जर एसकी मद्रा શે લાવત દેવ હવા છો. ત્ય 🖓 (મને) नी है। एक से एडकाई की एक िका प्रतिपार्थ के प्रश्ने का बाधना में है। अधिना है रहर विकास में वास Sept. 4. 1

महाराज्यो क्षेत्र सहस्र में देवल्ला, प्रांत हान में पर पुरस्क अध्या पूर्व देखा हाजाराज की सहस्र कार्य केला का व्यक्तिक व्यक्ति 128 But

વામ નો તમાં જ જોનાવાન વો વેમ્સ્ટર नाध्यमें के विकास के मुख्य—'भारतेन नहीं नक्ष्य भागमा का लाइ बीक और है । हमाहि कर्ण में अस्तावन हैं ''

क्षा कार्यक्ष हुए एक ब्रह्मानिको है। जरण है। भागताय है। अबर हा निम् अर की एक जिले की नगर है । प्रश्ना की कप्रायमा प्रापंत इसके की इत्यास भाग वितर हर्मान से जिस्स के बावत देश हैं । पहिल्लाकी अन्देश स्वर से 🗐 वहें, राकता है !" विदेशकों के छहा





नस्ता, बीहर, अवस्ता से पूर्व की प्रकार प्रधान, से प्रकार भाभता किया । असी इस स्टब्स्ट केंद्रिके देखी बन्न के बुद्ध वर्ग स्टिस एक ाम भागा । एके होते मंदि कान के द दार अमंत्री महि, अपन में एक अहर करना केंद्रि नाम है, हो युस्के के अन्य की करना नेक अनिकास यह है किए जा सकता है 🗥

पर सुन, कदमरा इसके अपनेने आजा . वर्तिके हो या अधिकाप ने प्राप्त है।

इस ५१० विकास (बरदार, ७,१८) । इस ४.५% प्राप्ताम वाली है ज राज्य देवा में पूर्ण इसूड, द्विष्ट्र, डिकाले, दार्द्ध में विकाले " नाइक्स

बद्धा में देश विकार है है। बाह्य है इसके की पार्ट में नेप वाया । एक दमरे में परिश्व कर्मन अध्यक्ष बार रही हैं। इस्टिय अक्षाप्त है. बाम ज़मका हुन्द्र न विद्यार " करमण, पुर कोटी है। हुआ के यह अवित, यह देना, करणा के अध्यक्ष का ाट यज कराती : क्यो पानी चानी भागा अपनेश करते अस्तिक का केन करते. (₹46 +





ल्या महाकेद्वा मधने की सुव का समान्यात सुन्दकर, राजात त्या लग्नुत में उदाने रुपा । यह अर्थान ने अपने देश है। बे**म**नस् घटा *" स्ट*र्डण के मने हो: वह कर निक्ता है अने हाज उन्ह शन कर्मना को मारक्त भागा है । राक्त कुरुक्त हिम्म लाल सहस

बहर बहुत्या है। है बहुत के किया के पान है। इन्हों में कहा है। यह बहर मार मार महिल्ला राभन बीर राजियी हर, पाली पर सवार ही प्राप्त मुद्देशक, सन्दर्भ, शहर लेक्स उन्हरीपत वा समझ वर जा ।



प्रमुक्ति में अपने स्था के चर्न जीवा राष्ट्रकी का पदमा रक्षान इन्द्रविक ने उपस किया और एक कहरी जाती की दांश वी की विकास में के प्राप्त के अध्यक्त ाके भेडरा की मुख्या है।

त्यार इस्ट्रांजन में बाद से अपूर्ण इसके व्यक्त प्रमुख कीर क्षित्र की केंद्र के एक । मान के प्राप्ति कि बहुत अनुहों हर स्थान रहा बीट मोहिसी के स्टब्स जो मार्क के उत्तरपति। सा अस्ति ।

. शाक्षम सेन्या ने अस्तरपात पुन्नात के मान सुद्ध के निष्यु कृत किया ।

बाजरें। पर एक इत्य की व्याप्तक आपना मुना ।

मनुना पासर वंध शासरमञ्जूत, सक. विनद्ग, तहा, जापक्षका, स्ट्रावित, प्राप्ति, अवद, दिवेद कारि इन्डॉरन ए जोर हा, बाजी से पाल्य हो गरी (

कुड स्टेंडर है। मध्य के बार स्थित उत्पन्न कार्य के रूप का समाप्त को बात के ला प्रसंधन है। के उन्दर्शन कर स

> इन्छोलन होस्य अन्तर्थे असे भाग गाउ सरमात्र की किंग काम है अपराध से ter-" fet legf in fit fift an fant.

ाथे. के खनताड़े की रही देश है। उनकी बाह के कारण कभी पासर हैना। राजन परी है। बांद रह यह दिसाई कि रह की सहित है, तो इन्हरित गन्तुष्ट लेखार चन्छ संस्थित । "

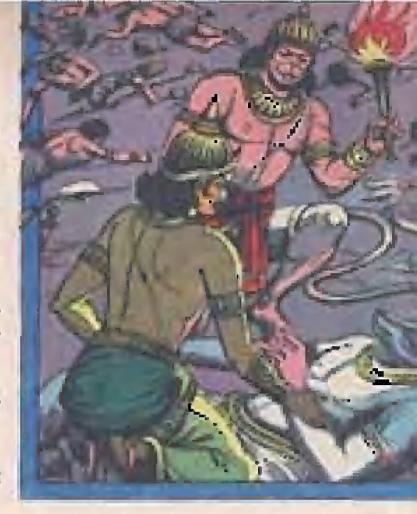
स्था सम्बद्धा है। भी भी हैन हैसा, ্রাটাল কর্ম ট্রেক সমা বাটিল 421 851

राष्ट्र बर्धान के प्रतिहर वर्षात्रा में देखका शहर हैया का विकास है। इसे . मुद्रीय, सीब्द, अंग्रह, अमहदन्त सनगन्द रापायुक्त मोध्ये नेहीकी में में .

यम बद्धना के देशका निवेदन करना के इंडिंग्डिंग दे जार। - नम पि.ह. ल हर्ने, सम उपन्य निर्देश करा है, यूदि अर्थन को अधिक स्थान और है । "

ना है गई थी। अध्यक्त भा ते गररन यहर की एए थि. स्टॉ न स प्यता था. उन्हों कीन इंडिन ये होन चीन द्वा , इसकिए तत्वाद और विशेषक विकास के बच्च उनकी की उन्ने करी ।

उन्दर्भित से प्रमादित जान का पान वर्षा में सदलद करेट बारस की हुए दिना का । तो फिर नहीं थे, अनुने स्क्रीय,



अंशर, में या गरन नहीर कितने ही दिलाई विके । के अध्यवस्य की शीवने स्ती। सहस्राह्म अध्यक्षक हार्यक्षक जीता औ क्षेत्राई दिया ।

विक्षेत्रक है। तास्थरन के प्राप्त आधार वटा—" वपर, मेरिस के हैं। बार "

एक्वयम्न में स्वी अध्यात है प्रसान-भागपा नह विश्वीवत ही बेट्स गरा है ह मुझे अपने हैं दिसाई नदी है हत है। वका उपनान सेता है। "

गराना, पुन मुस्रोत, अन्दर, मान, त्याच्या के पनि ते न पुरुषक सत्यान के

इति है। करो पूछ की देता । अनीपान के पुरुष्ट ।

प्रमुख्य हो हो हो एक्स के बारे के स्थान है। सुद्धी, उद्भान के मा बार की है। सुद्धी, उद्भान के मा बार की है। महिल्ला की है। महिल्ला का स्थान की स्थान की साम हो है। महिल्ला की स्थान की साम हो है। सुद्धी की स्थान हो है। सुद्धी की सुद्धी क

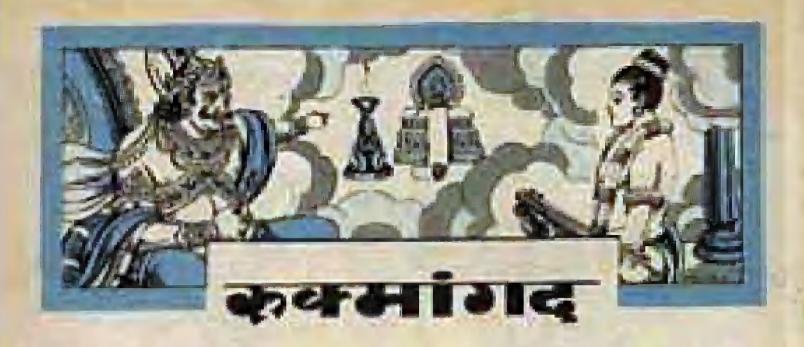
हम् पानि, ते ये वर्ष स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ प्रश्यास्त के पान जातक, जादि केल पर प्रश्यक स्वर्धक विश्वार स्वार्थ स्वर्थ मुक्ते की साम्बद्धक में क्ष्य में पान भाषी ।

ा केटा, इन्हानक राज्य आहा. इस बाजरा बहे कसा का नाम अहम हुए पर हो। है : यह दोन वृत्यों करवाय बहा नहां पर कारण : तृत्यों कर्यु : ह कर्या विक्ताय कर प्राण्य केंग्रा ! यह कर्या है! दिन व कर्यु : तैन विकास है । यह केंग्रा के बीन में केंग्रामी क्या है । इसके क्राया पर कर्यु कर्यों नाह दिला केंग्रा कर्या है । इनका क्या है किस्पानक्षी, क्या क्यां। सन्तर सेंग्राचेंद्र केंग्रा क्यां हम ब्या केंग्राचित्र केंग्रा क्यां केंग्राच क्यां। हार्यक्षा है इन्द्रा केंग्रा क्यां है हम्

नुस्य रमुक्तम र एति समान एक परेत रिमाल का मार्ग रिवर मार्गर द्वारत । तेर य निर्माण गर्मा राहस एर खा वार्ते, दिरुष्ठ जागाम से इंडा



12/2/17



स्तुनी रक्षांबद दान का राजा हुना करता

वा। उनकी पत्नी कर नाम सन्वाननी वा। उनके एक सरका था, जिनका नान पर्गोगद था। सन्नांगद बड़ा गीभा और बता विज्ञुसक था। उसका विज्ञान था, कि एकादणी मा से क्य बार नते जने वे। यद अपनी मना को सरका के उस से बनाना है, तो एकदकी वा करना है। इक नाम मार्ग है। इनकिए स्नांगद ने बेचना करवाई कि दर कोई उनके राज्य में स्वानदर्श कर रखे और जो न रखेगा सरको दम्ब विका अभेगा।

स्वज्ञांकद के इल नियम से बजा ने नरक बल्वा केंद्र दिया । नरक उजद-मा गया। विष्णुत को भी प्राप न रहा। यम संस्थादी रहा था कि यह बेकार है। वधा या इतने में खरद ने आकर वड़ा— "क्या बात है, का राजा, वहीं विन्ता में इवे हुए ही!"

"गानद, देखी, मेरे डोक की क्या गानि है। पूर्क रचनावद डोगों से एकादशी मन करना रहा है इस्तिए मामल हाथा करनेयाले भी स्वर्ध जा गहे हैं। जिल्लाम मी। मीन गरें। वाली बेटा है। ने भी बेपार बैटा है। जप काम ही। म ही, तो ब्या पद किस च्यम का। साही परिश्विति ने इस जबा की ही बनाईगा।" वस ने कहा।

नारद कम राजा की अनने तिला के भास के गया, प्रका दरकार में था। इस की देसकर प्रका के बारों और सब सोग जादम में कामाक्सी करने बने। कम



रोता मंद्री के देशे दर गया। सना में सत्तवसी मच गयी। पादुदेव ने सन की चुन साने के लिए का यम से पड़ा---"वो शुकारी दुरवण्या है उसके बारे में पुत्र बच्चा ने निवेदन करों।"

"में व्यर्थ हो गया है। मुझे अब बोई ग्राम नहीं है। मेरी गोई परवाह मही करता है। वो पुल्य कठोर ताल्या या या आदि से नहीं मिठता है, वह प्राम्हर्मी मत से बिन जाता है। एकाइसी के दिने पुता जन्दन त्यापन स्नाम करके विद्य जन्मास विस्ता गया, तो हर विस्ती की

र्केन केक मिनते हैं। नव मुहा का नीकरी नहीं पाहिए। मान इसे के कीजिन जीर नुसे जाने दीजिये। यह रहा मेरा दण्ड जीर पह रहा पाप पृथ्य का जेका-जोसा। जम रुक की इसमें किसा होता था, उसे कीई मिटा नहीं पाला था। पर मन यह रलभावद पड़ी से ना पड़ा है।" यम ने पड़ा।

पर तुनका, बहा ने इन को सूच फरकारा। "एकादशी बात को गेकनेवाले तुन कीन दोते हो। एकादशी विष्णु का मिन दिन हैं, एक बार हरि का स्वरम काने नाम से, दस अधनेकों का पूच्च मिनना है। सेर, बही मनीकत है, विष्णु मन्तों में, विष्णु के विरुद्ध यह बढ़ने पर, तुन्हें भाग नहीं में, इस विषय में सुन्दारी कुछ की मदद कहीं कर सकता।"

यम ने भी विद नकड़ी — "नाना, उन यम नेरी मदद नहीं करोगे में गापिस नहीं जाकेंगा। गम तफ स्नमांगद कर राज्य है, सब तक मेरी कोई नहीं सुनेमा। यम अस्य ऐसा करों कि यह बत और निका के मार्ग में विचलित हो गामे। जैसे भी हो, उसका मह नेग कर हो। यह सुनने

यह किया, तो एकदर्शी का ज्यासकी के याम नहीं पटकुँगा।"

महाने सुद्ध देश प्यान किया जिस इसने बोहिनी की की खुद्ध की । मोहिनी ने मबा से पूछा - "नीन क्षेकों को युक्त पत्रनेवाणी सुद्ध की को बनाने का तुष्दारा क्या उद्देश है । "

बद्धा ने मोहिनी को स्वर्गानद के बारे में, उसके भगा को बनाने एकन्द्रशी निक्रम के बारे में और उस कारण मन की दुस्थित के बारे में बताया। चिर उसने यह उसक भी बताया, कि कैसे वह आकर स्वर्गानद को सुग्य गरे, उसका कैसे वह भी की भी करे।

मोदिनी, मबा से जाजा लेकर रास्ते में देवताओं को देखती, नम्बर वर्गत पर गई, उस पर्धत पर सजापुत के अवस्य एक मही पाटी-सी बनवाई मी। उसे इस किंग मजा जाता मा। यह पड़ा रूप मदेश मा। मोदिनी वहाँ एफ मनाट परधर पर बेटकर बीका बजानी गाने स्थी।

एन बीच स्वसंबद की बानप्रस्थ वरना पता। कभी सम्पूर्ण बस्बूद्रीय पर इनका एक छत्र राज्य का। उसने समस्त सुनी का करमीम किया का। उसने अपना



साथ उसने स्था में भी भीड़ कर दी। यम लेक को उजाव-मा दिया। नव कोई ऐसी चीज म थी, जिसे यह चाजता हो। उसका स्टूबर धर्मांगद था। यह हर चीड़ में पिता को मात करता था। यह हर चीड़ एक द्वीप था गामा था, की धर्मांगद सात द्वीपों था था। जिसे सिकसानी होने पर भी पर्योगद अपने पिता और माता थी, बीर पिता थी तीन सी पित्रकों थी वर्षी थार मिता थी तीन सी पित्रकों थी वर्षी थार जीर मिक से देखता। स्नयांगद जाने सम्बेह का राज्यांभिषक करने उसे नी प्रका तारा एपल्ड्यी वन मन्तने के किए आदेश वैषार, यथी से विया केवन, विषे पर स्वार दोवन में के परंत जाना। वन्ती की अनकों में देनी का संगीत सुनती विवा तुरत पर में देनी का संगीत सुनती विवा तुरत पर में कि वर में उत्तर में। जिस विवा में मंगीत वाषा था, उस और नावा भागा ववा और उनने में दिनी की देखा। उनकों देखते ही, उसका जन विवश-मा के उद्या पर व्यक्त पाम जन्म मार्थित-ना हो गया।

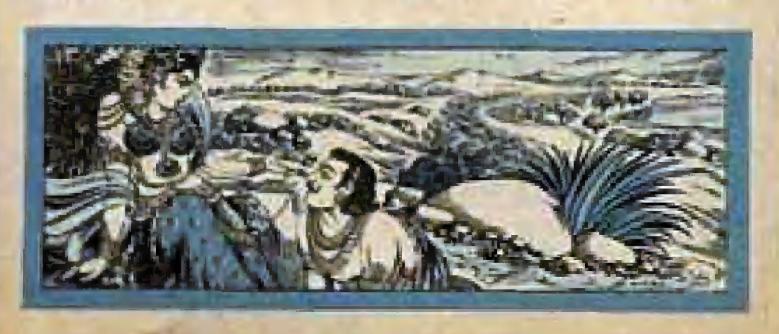
मंगिती में बीचा प्या तरफ रमी।
रवसंगर के पंत भागत पूछा—"शता,
उद्ये, तुन तो सन्य भी छोपकर कामें हो।
पित मुसे देलपार, पैसे इतने गुन्य हो।
गर्म। भी तुम मेरे माथ प्रमा किरना
नाही, तो मेरे निम्मानुसार बोमक मेरे
साथ रही।"

महिना ही रमकागद बना आन्त्रमा तुना। उसने मोहिनी में कहा—" मेरी बर्वे गुन्दर बिकों हैं। पर तुन केसी गुन्दर बी मैंने कहीं नहां देखी। पवि तुन मेरी ही हर्वे. वी जो बादोगी, यह दे हुँगा। मेरा मारा राज्य गुन्दारा है। मैं भी तुन्दारा है।"

भीडिनी से स्वयांत्र का दावां हाथ प्रकार पदा— "यदि पदी बात है, ती मुक्ती विवाद कर की. नहीं ती, जी हमारा पुत्र दीगा, वह चंदाक समझा जानेता।

स्वतांत्रव ने उसकी इच्छानुसार शासीक रीति में इसके गांव विवाह वर किया। "अब पुन जो बादी वर्गा, क्या पूरी पूर्ने पिरे! या किसी और प्रवंत पर चते! या हम जाने पर चते! "

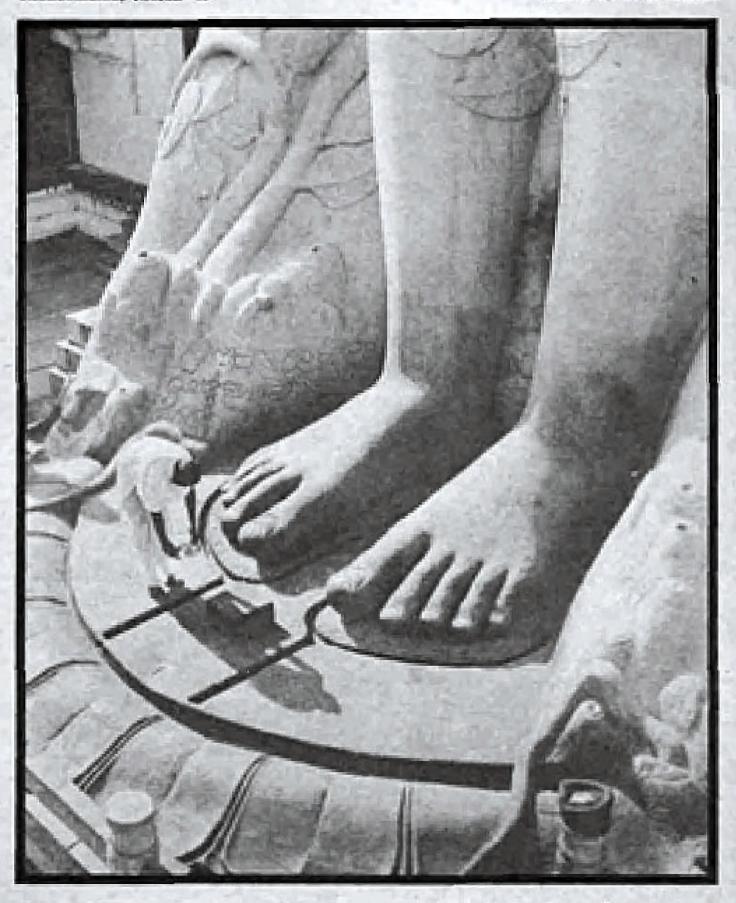
भोदिनी उसके साथ वर जाने के लिया मान गर्दे। अभी है



३९. स्वर्गालय

चीन के मन्दिरों में सब से जबिक प्रसिद्ध एम स्वर्णालय की 193० में गुन्म-को सम्बद्ध ने बनवादा था। यहाँ सम्राट स्वर्ण जकेका भारापना बनता या और वर्ष में तीन बार बहिन्दी दिया करता था।





पुरस्कृत परिचयोक्ति

गजब की है ये खिल्पकारी!

प्रेयक : रायकतुमार मुखर्जी - माडावादा



पुरस्कृत परिचयोषि

देखें कैसी थी प्राचीन भारत की नारी !!

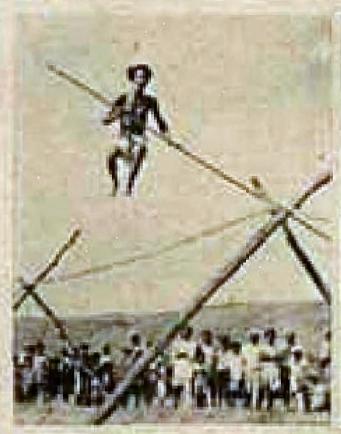
क्षेत्रकः क्षत्रकुमार मुखर्जी - भारापारा

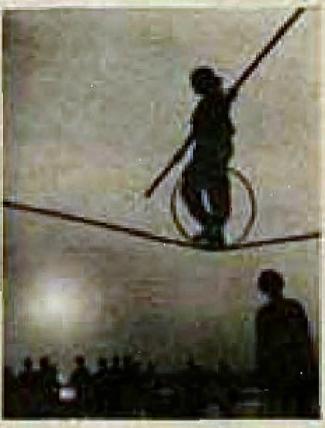
फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता

मार्ग १९६५

11

पारितोषिक १०)





सपया परिचयोक्तियाँ कार्ड पर ही भेलें!

कार के बीतों के लिए प्रथम् स्व प्रयोगियाँ पाईए। परिपारितारों की दीन पान्त की हो और घरतपर संपन्तित हो। परिपारितारों पूरे नाम और पर्ते के नाम बार्क वर ही जिसकर निप्रतिबंधन पर्ते यर जारीस न मार्च १९६५ के अन्दर मेजनी पाहिए।

प्रोदो-परिचयोकि प्रतियोगिता सन्दामामा प्रचारातः यद्भावतः सद्भास-२६

मार्च प्रतियोगिता - फल

मार्थ के प्रोटो के लिए निक्रिकिशिश वरिक्रमेशिकों जुनी गई है। इनके प्रेक्ट को ३० क्यों का पुरस्कार मिन्नेगा।

बाइमा कोरो। राजय की है में शिक्यकारी !

राग कोते। देखें केसी भी मानीन भारत की नारी !!

क्षेत्रः सपनकुमार मुखर्जी.

Co जा. थी. शुक्रकी, देल्वे हरेकब, आरामादा, किया - रायपुर (स. 2.)

